चन्दामामा
फ़रवरी १९६६
75 P

## स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी

जन्मः २-१०-१९०४ मृत्युः ११-१-१९६६

"छोटे आदमी भी बड़े काम कर सकते हैं।" ये शब्द स्व. लाल बहादुर शास्त्री के हैं, और उनका जीवन ही इसका दृष्टान्त है। वे कद में छोटे थे। पर उनकी प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा भी बहुत बड़ी न थी। उनका नाम सारे देश में न गूँजा। बड़े वक्ता भी न थे। निराडम्बर थे, वे लगनवाले और निष्ठावान व्यक्ति थे। उनके निकट मित्र ही उनकी महत्ता से पूरे परिचित थे। यही कारण है कि जवाहरलाल जैसे जगत् विख्यात व्यक्ति ने उनको अपना उत्तराधिकारी चुना।

१९६४ जून के प्रारम्भ में, जब स्व. लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधान मन्त्री बने, तो कई ने सोचा कि उन पर मानों प्रतिष्ठा थोपी जा रही हो। परन्तु १९ मास के पद काल में उन्होंने निरूपित किया कि वे उस पद की प्रतिष्ठा के अनुरुप योग्य थे। हमारा देश अत्यन्त विस्तृत देशों में एक है। इसकी सैकड़ों अपनी समस्यायें हैं। ये आसानी से साधारण व्यक्तियों को समझ में भी नहीं आती हैं। शास्त्री जी ने यह विपुल शासन भार निभाया ही नहीं, परन्तु इस छोटे काल में ही अपना नाम भारत के इतिहास में वे अपने कार्यों से अमर कर गये। उनकी आकस्मिक मृत्यु संसार के सभी देशों के लिए एक दुखद वार्ता थी।

लाल बहादुर १९०४ ओक्टोबर २ में वाराणसी के पास मुगल सराय में पैदा हुए। उनके पिता शारदा प्रसाद गरीब अध्यापक थे। पर बाद में, वे अलाहाबाद के रेवेन्यू आफिस में क्लर्क बने और वहीं वे गुज़र गये। तब लाल बहादुर जी की उम्र डेढ़ वर्ष की थी। उनकी पत्नी इसके बाद, अपने माइके चली आईं (वे अभी जीवित हैं)

लाल बहादुर जी के नाना एक संयुक्त कुटुम्ब के मुखिया थे। उनका नाम था हज़ारीलाल। छटी पास करके, आगे पढ़ने के लिए लाल बहादुर बनारस में अपने मामा रघुनाथ प्रसाद के घर गये। वे वाराणसी मुनिस्पलिटी के दफ्तर में मुख्य क्लर्क थे। वे बड़े नियम परायण और दृढ़ निश्चय के व्यक्ति थे। उनका प्रभाव लाल बहादुर जी पर काफी पड़ा।

१९१५ जब गान्धी जी बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना करने आये, तब लाल बहादुर जी ने उनको प्रप्रथम देखा। छुटपन से ही उनमें प्रजा सेवा की प्रवृत्ति थी। वे विद्यार्थी ही थे कि वे भारत सेवक समिति में शामिल हो गये। वह एक प्रकार का स्काऊट आन्दोलन था। कुछ साल बाद वे १९२७ में लाजपत राय द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स आफ दि पीपल सोसाइटी में आजीवन सदस्य हो गये।

१९२१ में, गान्धी जी ने जब सत्याग्रह प्रारम्भ किया, तो लाल बहादुर स्कूल फाईनल पढ़ रहे थे। वाराणसी में गान्धी जी का भाषण हुआ। लाल बहादुर जी ने गान्धी जी के निश्चय के अनुसार स्कूल छोड़ दिया। उनके मामा बड़े चिन्तित हुए।

परन्तु लाल बहादुर ने पढ़ना न छोड़ा। वे काशी विद्यापीठ में दाखिल हो गये। चार वर्ष पढ़ने के बाद, उनको "शास्त्री" की उपाधि मिली और वे लाल बहादुर शास्त्री बने। विद्यार्थी काल में वे निर्धन ही रहे। तभी उन्होंने समन्वय का दृष्टिकोण अपना लिया। प्रजा सेवा उनके लिए उत्तम शिक्षा सिद्ध हुई।

१९२७ में, शास्त्री का विवाह हुआ। वधु मिर्जापुर की थी। नाम ललिता। शास्त्री जी का दहेज था, एक चरखा और दो चार गज खद्दर। ससुर इससे बड़ी दहेज दे सकते थे। जब वे सर्वेन्ट्स आफ इन्डिया सोसायटी में अल्हाबाद में काम कर रहे थे, तब वे जवाहरलाल नेहरू के सम्पर्क में आये। लाला बहादुर शास्त्री जी भी, जवाहरलाल नेहरू की तरह, कान्ग्रेस का काम ठंडा पड़ जाने पर, म्युनिस्पालिटी के कार्यों में दिलचस्पी लेने लगे थे।

१९३० में, जब गान्धी जी ने सत्याग्रह शुरु किया, तब शास्त्री जी ने किसानों को कर न देने की सलाह दी। वे इस कारण गिरफ्तार किये गये और उनको ढाई साल की जेल सज़ा दी गयी। इसके बाद उन्होंने हर सत्याग्रह में भाग लिया और अपने जीवन के नौ वर्ष उन्होंने जेल में काटे।

१९४६ में, देश में कान्ग्रेस सरकारें स्थापित हुईं। उस समय, गोविन्द

वल्लभ पन्त के मन्त्री मण्डल में, उनको पार्लियामेन्टरी मन्त्री का पद मिला। जब रफी अहमद किदवई को दिल्ली जाना पड़ा और उनका मन्त्री पद स्व. लाल बहादुर शास्त्री को मिला। १९५१ तक वे इस पद पर रहे। फिर वे राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए। उसके बाद वे केन्द्रीय सरकार के भिन्न भिन्न विभागों के मन्त्री रहे और जनता की नज़रों में निरन्तर रहे। १९६३ "कामराज योजना" के अन्तर्गत जिन मन्त्रियों ने पद छोड़ा, उनमें स्वर्गीय शास्त्री जी भी थे।

१९६४ जनवरी में, भुवनेश्वर के अधिवेशन में, जब नेहरू का स्वास्थ्य बिगड़ा, तब श्री शास्त्री जी को बिना विभाग का मन्त्री नियुक्त किया गया। नेहरू ने उनको अपने उत्तराधिकारी बनाने के लिए काफी हिदायतें दीं। शास्त्री जी वैदेशिक विभाग, केबिनेट सेक्रेटरियट और अणु शक्ति के पद दिये गये।

नेहरू जी के मरण के बाद, कान्ग्रेस अध्यक्ष का यह निश्चय था कि कान्ग्रेस पार्लियामेन्टरी पार्टी अपने नेता को एकमत से चुने। इस प्रकार निर्वाचित होने का भाग्य श्री लाल बहादुर जी को मिला, इस पद से, जिन समस्याओं को उन्हें सुलझाना पड़ा, वे बहुत जटिल थीं। खाद्य समस्या, बढ़ते दामों की समस्या, काश्मीर में पाकिस्तानियों का दुराक्रमण आदि। इन समस्याओं को धैर्य से, श्री शास्त्री जी ने सुलझाने की कोशिश की। उनका शक्ति सामर्थ्य सबसे अधिक सन्धि वार्ताओं में व्यक्त हुआ। जब और कोई रास्ता न रहा, उन्होंने पाकिस्तान के युद्ध का युद्ध से जवाब दिया और इस कार्य में सारे देश का समर्थन पाया। फलतः वे देश की दृष्टि में और उन्नत हुए और जब पाकिस्तान से सन्धि करने का समय आया, तब उन्होंने अपना शक्ति सामर्थ्य शान्ति की स्थापना में भी दिखाया। यह ही उनके जीवन का अति उन्नत क्षण था और यही उनके भौतिक जीवन का अन्तिम क्षण भी था। ताश्केन्द में सन्धि पत्र पर आयूबखान के साथ हस्ताक्षर करने के कुछ समय बाद, वे अकस्मात् दिवंगत हो गये।

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन....
डाबर
जन्मघुँटी
डाबर
(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२६

फरवरी १९६६

★

विषय - सूची



★


एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ८-४० पैसे

२५ से अधिक वर्षों से लोकप्रिय
सोल
डिस्ट्रिब्यूटर्सः
जे. एल. मोरिसन,
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) प्राइवेट लि.
बम्बई - दिल्ली - मद्रास
कानपुर - कलकत्ता
Asha
आशा स्नो, फेस पाउडर, काजल तथा अन्य सौंदर्य प्रसाधन
Shilpi-M-2-HD

बिस्कुट
इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

# यह है डिज़्नीलैण्ड !

**ईगल फ्लैस्क-परिवार का एक नया और सुन्दर हमजोली**

यह सुहाना डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क हर जिन्दादिल इनसान को बहुत पसन्द आयगा। इसके साथ मशहूर डिज़्नी व्यंग-चित्र भी मिलेंगे जिनसे आपके परिवार का हर सदस्य बहुत खुश होगा। और फिर, आपको ईगल की ये मशहूर खूबियाँ भी हासिल होंगी: फ्लैस्क को बेफिक्री से लेकर चलने के लिए कन्धे पर लटकाया जा सकनेवाला पट्टा, आपके मनपसन्द चुनाव के लिए ५ सुहाने रंगों में मिलनेवाले प्लास्टिक के मज़बूत ढक्कन, पेटेन्ट लीक-प्रूफ पेचदार स्टॉपर, कन्धे और तली के नीचे झटके रोकनेवाली गद्दियाँ। इसके अतिरिक्त ईगल फ्लैस्क की विश्वविख्यात उत्कृष्टता तो रहती ही है।

**हर डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क एक मैजिक कार्पेट कार्टन में आता है...**

यह चमत्कारी कार्टन एक बोर्ड की शकल में बदल जाता है जिस पर हाल के हाल तीन दिलचस्प डिज़्नीलैण्ड खेल (डिज़्नीलैण्ड टूर, लकी स्किप, ऑल एबोर्ड) खेले जा सकते हैं। यह भारत के लिए एक बिलकुल नयी चीज़ है। हर फ्लैस्क के साथ आपको शतरंज का न टूटनेवाला पाँसा बिलकुल मुफ्त मिलता है।

इस खुशनुमा कार्टन में एक डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क आज ही खरीदिए! आपको और आपके बच्चों को यह बहुत ही पसन्द आयगा!
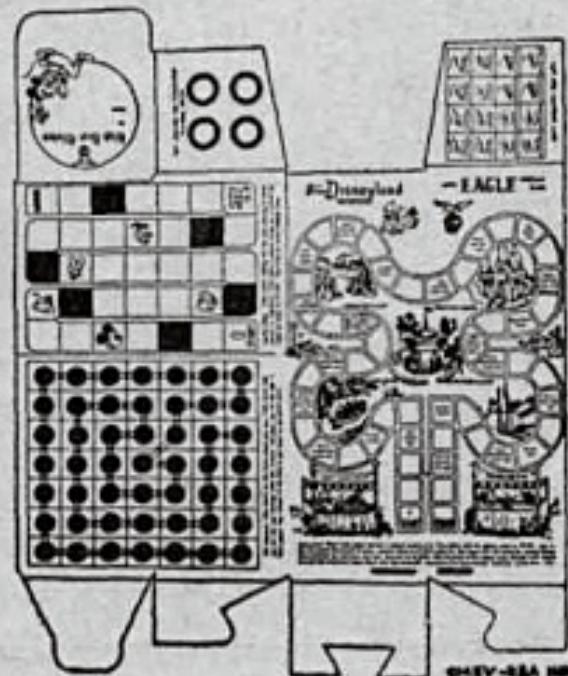
क्षमता: लगभग ½ लिटर

**ईगल** वैक्यूम बॉटल मैन्यु. कं. प्रा. लिमिटेड

१३४/४६, शेरिफ देवजी स्ट्रीट, बम्बई-३

आ रही है
बाल स्पुतनिक
नई बच्चों की मासिक पत्रिका
हिन्दी और अंग्रेजी में

देने वाला भी प्रसन्न
दौराला
गोलियाँ
और टाफ़ियाँ
लेने वाला भी प्रसन्न
डी सी एम उत्पादन
INTERADS

# चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हम पिछले ५० मास से "संसार के आश्चर्य" का स्तम्भ नियमित रूप से दे रहे हैं।

इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रायः वे सभी आश्चर्य आ रहे हैं, जिनकी चर्चा होती है। कई ऐतिहासिक रूप से महत्व रहते हैं, तो कई वनस्पतिशास्त्र की दृष्टि से मुख्य हैं। कई भौगोलिक रूप से जानने योग्य हैं। इनके चयन में हम अपना दृष्टिकोण एक देश तक ही सीमित नहीं रखते।

इनके प्रकाशन से हमें विश्वास है कि पाठकों में उनको देखने की उत्कट इच्छा पैदा होगी। कम से कम वे आसानी से इस तरह कुछ ज्ञातव्य बातें, तो जान ही सकेंगे।

वर्ष: १७ फरवरी १९६६ अंक: ६

# भारत का इतिहास

औरन्गजेब का शासन का आधा समय उत्तर भारत देश की समस्याओं को देखने में लग गया। दक्षिण देश की शासन स्थिति उसके प्रतिनिधि देखते आये थे।

दक्खन के सुल्तानों की स्थिति सुधरी नहीं। इस कारण महाराष्ट्र साम्राज्य वहाँ स्थिर और दृढ़ हो गया। वह मुगल साम्राज्य का प्रतिद्वन्दी भी होने लगा।

औरन्गजेब ने पहिले इसकी परवाह न की। परन्तु अपने लड़के अकबर और महाराष्ट्र के राजा, शम्भाजी (शिवाजी का पुत्र) की मैत्री को बढ़ता देख औरन्गजेब ने दक्षिण में अपनी नीति ही बदल ली। उसने मेवाड़ से सन्धि कर ली। १६८१ में वह दक्षिण की ओर निकल पड़ा।

अकबर को पकड़ने के लिए औरन्गजेब ने चार वर्ष बहुत प्रयत्न किया। वह मराठाओं के साथ लड़ाई में सफ़ल न हुआ। यह सच है कि मुगलों ने कुछ महाराष्ट्र के किलों पर कब्जा कर लिया था। पर शिवाजी द्वारा उत्तेजित महाराष्ट्र की जनता को वह काबू में न कर सका। जनता उससे मोर्चा लेती रही।

इसके बाद औरन्गजेब ने दक्खिन की सल्तनतों को जीतने की कोशिश की। अप्रैल १६८५ को औरन्गजेब ने आखिरी बार बीजापुर का घेरा डाला। अगले साल जुलाई में, औरन्गजेब स्वयं वहाँ गया। आदिलशाही वंश का आखिरी सुल्तान सिकन्दर औरन्गजेब के सामने झुक गया। यूसुफ़ आदिलशाह का वंश उसके साथ खतम हो गया।

औरन्गजेब बीजापुर में सिकन्दर के राजमहल में गया और उसे उसने तहसनहस कर दिया। बीजापुर हारा ही नहीं, वह उजड़-सा भी गया।

१६८७ फरवरी में औरन्गजेब अपनी सेना के साथ गोलकोन्डा गया और वहाँ के किले को घेर लिया। गोलकोन्डा आठ महीने तक औरन्गजेब का मुकाबला करता रहा। फिर गोलकोन्डा के सुल्तान अबुल हसन के एक अधिकारी, अब्दुल्लामनी ने, जो अफ़गान था, औरन्गजेब से घूँस लेकर किले के मुख्य द्वार खोल दिये और मुगल सेनाओं को अन्दर आने दिया। गोलकोन्डा इस तरह औरन्गजेब के कब्जे में आ गया। अबुलहसन दौलताबाद चला गया और सालाना ३०,००० रुपयों का गुज़ारा लेने लगा।

दक्खन को इस तरह वश में करके औरन्गजेब महाराष्ट्र को वश में करने के लिए प्रयत्न करने लगा। शुरु शुरु में उसको कुछ सफ़लता भी मिली। "मार्च १६८९ में शम्भाजी को मौत की सजा दी गई। रामगढ़ जीत लिया गया। उसका छोटा भाई राजाराम कहीं भाग गया। उसका बाकी परिवार कैद कर लिया गया।
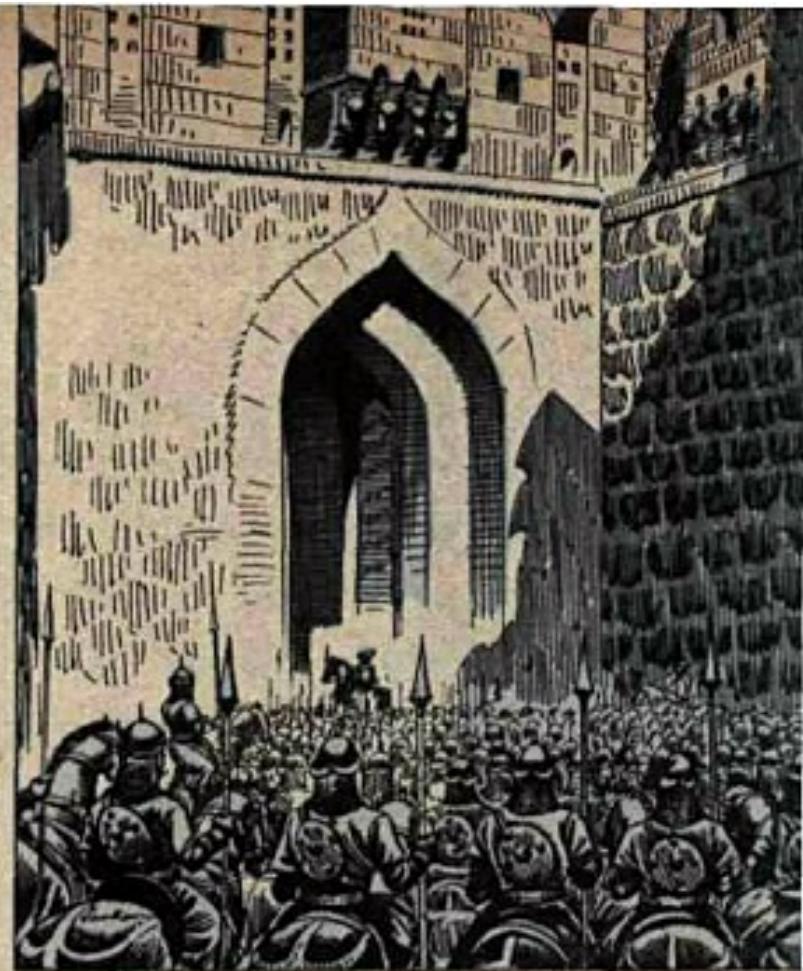
इसके बाद तन्जाऊर और तिरुचनापल्लि के राज्यों ने भी औरन्गजेब के आधीन होकर उसको कर दिया, १६९० तक सारे भारत का औरन्गजेब बादशाह बन गया। परन्तु यह उच्च दशा, उसके पतन का भी कारण बनी। इतने विस्तृत साम्राज्य का एक राजधानी से एक व्यक्ति के लिए शासन करना सम्भव न था। सब जगह औरन्गजेब के शत्रु पैदा हो गये। उनको जीता तो जा सकता था, पर दबाया नहीं

जा सकता था। उत्तर भारत और मध्य भारत में अराजकता फैल गई। शासन में शिथिलता और भ्रष्टाचार बढ़ने लगा। दक्षिण में जगह जगह फैले हुए, अपने अधिकारियों को ही औरन्गजेब नियन्त्रित न कर सका। राज पोषण के अभाव में कला और संस्कृति भी नहीं पनपी। औरन्गजेब के लम्बे शासन में न कोई सुन्दर इमारत बनी, न कोई काव्य लिखा गया, न कोई सुन्दर कारीगरी की चीज़ बनाई गई। दक्षिण में किये गये युद्धों के कारण खज़ाना खाली हो गया। स्थानीय शासक ज़मीन्दार बादशाह की आज्ञाओं का उलंघन करने लगे। सैनिकों को जब तनख्वाहें न मिलीं, तो उन्होंने बगावत कर दी, बादशाह के कुटुम्ब के निर्वाह के लिए और सेना के परिवहन के लिए बेन्गाल से नियमित रूप से मिलनेवाला कर ही एकमात्र आधार बन गया।

इतना सब कुछ हुआ पर मराठे झुके नहीं। १६९१ उन्होंने फिर अपनी सेनायें संगठित की और मुगलों के विरुद्ध उन्होंने राष्ट्रीय समर प्रारम्भ कर दिया। राजाराम ने उनका कुछ दिनों तक नेतृत्व किया। १७०० में, राजाराम की मृत्यु के बाद, उसकी पत्नी ताराबाई मराठों की अगुवा बनी।

विघटित होते अपने साम्राज्य को सुरक्षित करने के लिए औरन्गजेब ने उसे अपने लड़कों में बाँट देना चाहा। परन्तु लड़कों ने पिता की बात न सुनी। ३ मार्च १७०७ में औरन्गजेब अहमद नगर में मर गया। उसकी लाश दौलताबाद लाई गई। मशहूर मुस्लिम मीर बुरदुद्दीन की मजार के पास, उसको दफना दिया गया।

# नेहरू की कथा

[ १९ ]

जवाहर जब दूसरी बार जेल से आये, तो कान्ग्रेस में स्वराजवादियों और उनके विरोधियों में काफ़ी भेद हो गये थे। स्वराजवादी, शासन सभाओं में प्रवेश करने में कार्य रत थे। उनके विरोधियों ने अपने को गान्धीवादी कह तो दिया था, पर उनमें भी कोई खास दम न था। उनमें से कई सामाजिक सुधारों के लिए कटिबद्ध थे। उनका अच्छा काम केवल यही था कि वे प्रजा के अधिक समीप थे।

जवाहर की रिहाई के बाद, चित्तरंजन दास ने उनको अपनी पार्टी में लेने का प्रयत्न किया। जवाहर इसके लिए नहीं माने। मोतीलालजी ने अपने लड़के को, अपनी तरफ़ करने का कोई प्रयत्न न किया। उन्हें बहुत सन्तोष होता, यदि उनका लड़का उनकी तरफ़ होता। परन्तु वे अपने लड़के की विचार स्वतन्त्रता का पूरा पूरा आदर करते थे।

राजनीति में मोतीलाल और दास के बीच अत्यन्त मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। उनमें से अगर एक कोई कदम उठाता, तो दूसरा समर्थन करता। इस मैत्री के कारण ही जवाहरलाल का ख्याल था प्रजा में स्वराज दल को अधिक प्रतिष्ठा मिली थी। परन्तु वे उदारवादी ही शामिल हुए, जिनको पदों का मोह था और जो सरकार का सहयोग करना चाहते थे। चुनाव के बाद, ये प्रवृत्तियाँ और भी साफ़ हो गईं। इन "दुष्टान्गों" को मोतीलाल ने काटने का निश्चय किया।
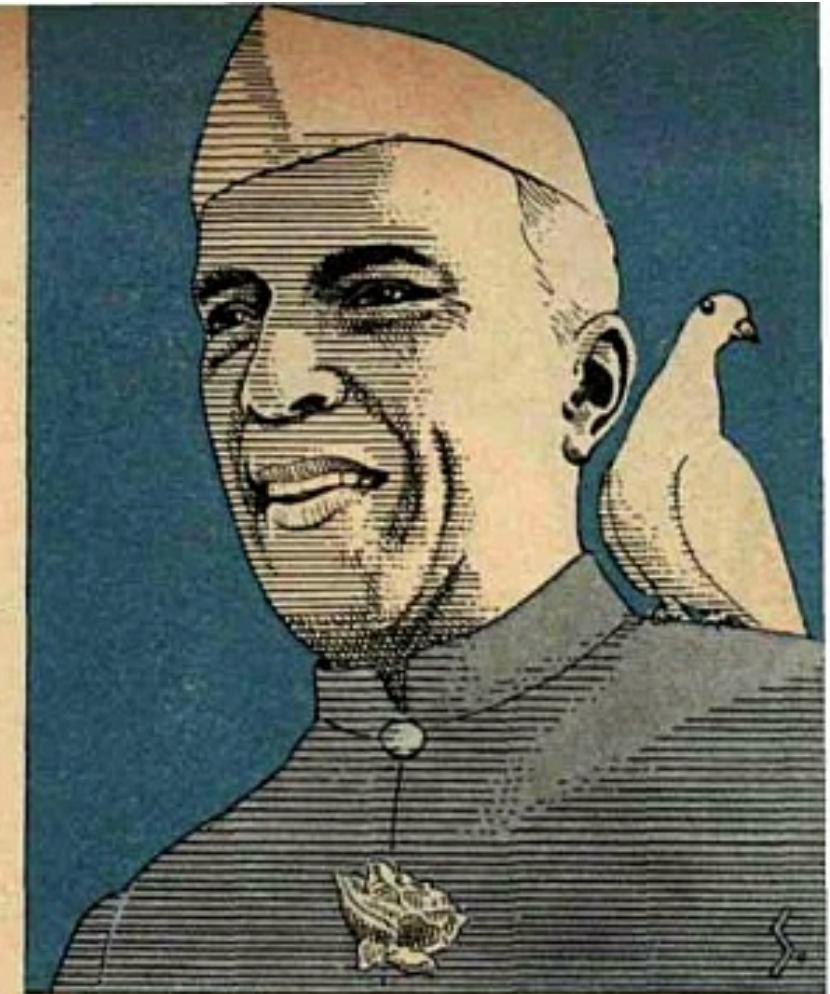
१९२३ से जवाहरलालजी को अपने कुटुम्ब की परवाह करने का समय ही न

लगा। वकालत की बात उठती, तो उनको उस पेशे पर, दिन प्रति दिन घृणा अधिक होती जाती थी।

१९२४ बेलगाँव कान्ग्रेस में, कान्ग्रेस के प्रधान मन्त्री को वेतन देने का प्रस्ताव रखा गया। जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। जो अपना सारा समय देकर, यह काम कर रहे थे, उनको भत्ता भी न दिया जाना, उनको बुरा लगा। परन्तु मोतीलालजी ने आपत्ति की कि जवाहरलाल जी कोई वेतन न लें। जवाहरलालजी के संयुक्त मन्त्री को धन की आवश्यकता भी थी, परन्तु उन्होंने कान्ग्रेस से पैसा लेना अपमानजनक समझा। इसलिए जवाहरजी को बिना वेतन के काम करना पड़ा।

तीन वर्ष तक जवाहर अपनी आर्थिक समस्या का हल न ढूँढ़ सके। यह बात उन्होंने एक बार अपने पिता के सामने उठायी। "थोड़े से धन के लिए, जो समय तुम देश को दे सकते हो, उसे क्यों जाया करते हो?"

"तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी के भरण-पोषण के लिए, सालाना जितने धन की

था। उनको इसका बड़ा क्लेष था कि वे आर्थिक दृष्टि से, पिता पर निर्भर थे। उनकी सारी शक्ति, देश की सेवा और पुर पालक सभा की सेवा में लगी हुई थी। वे धन के उपार्जन के लिए कोई और काम कर सकते थे, पर तब वे देश सेवा का कार्य न कर पाते। शायद जवाहरलाल नेहरूजी के नाम का लाभ उठाने के लिए ही कई बड़ी औद्योगिक संस्थाओं ने उनको काम दिखाया। पर उनको, इन बड़ी औद्योगिक संस्थाओं से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना ठीक न

ज़रूरत है, मैं उसे कुछ दिनों में कमा सकता हूँ।" मोतीलालजी ने कहा।

स्वराजवादियों और उनके विरोधियों का घर्षण बढ़ता जा रहा था। १९२३ की सरदियों में दिल्ली में, जो कान्ग्रेस हुई, उसमें स्वराजवादियों का ही पलड़ा भारी रहा। इस अधिवेषन के समाप्त होते ही जवाहर गिरफ्तार कर लिये गये।

पंजाब में सरकार और सिखों में विशेषतः कटारियों में आये दिन खींचातानी हो रही थी। उनमें धर्म के पुनरुत्थान के लिए आन्दोलन चल पड़ा था। गुरुद्वाराओं में, जो अनैतिक महन्त थे उनको हटाकर उनकी सम्पत्ति को वश में किया जाने लगा था। गुरुद्वारा आन्दोलन चूँकि राष्ट्रीय आन्दोलन था इसलिए वह भी अहिंसामय सत्याग्रह के रूप में चल रहा था। गुरु के बाग के आन्दोलन में अनेक सिख, जो कभी फौज में थे पोलीस के हाथ बुरी तरह पीटे गये। न उन्होंने आन्दोलन रोका, न पोलीस पर हमला ही किया। उनकी निष्टा, त्याग भावना और धैर्य साहस देखकर सारे भारत को आश्चर्य हुआ। सरकार ने गुरुद्वारा कमेटी को गैर कानूनी करार
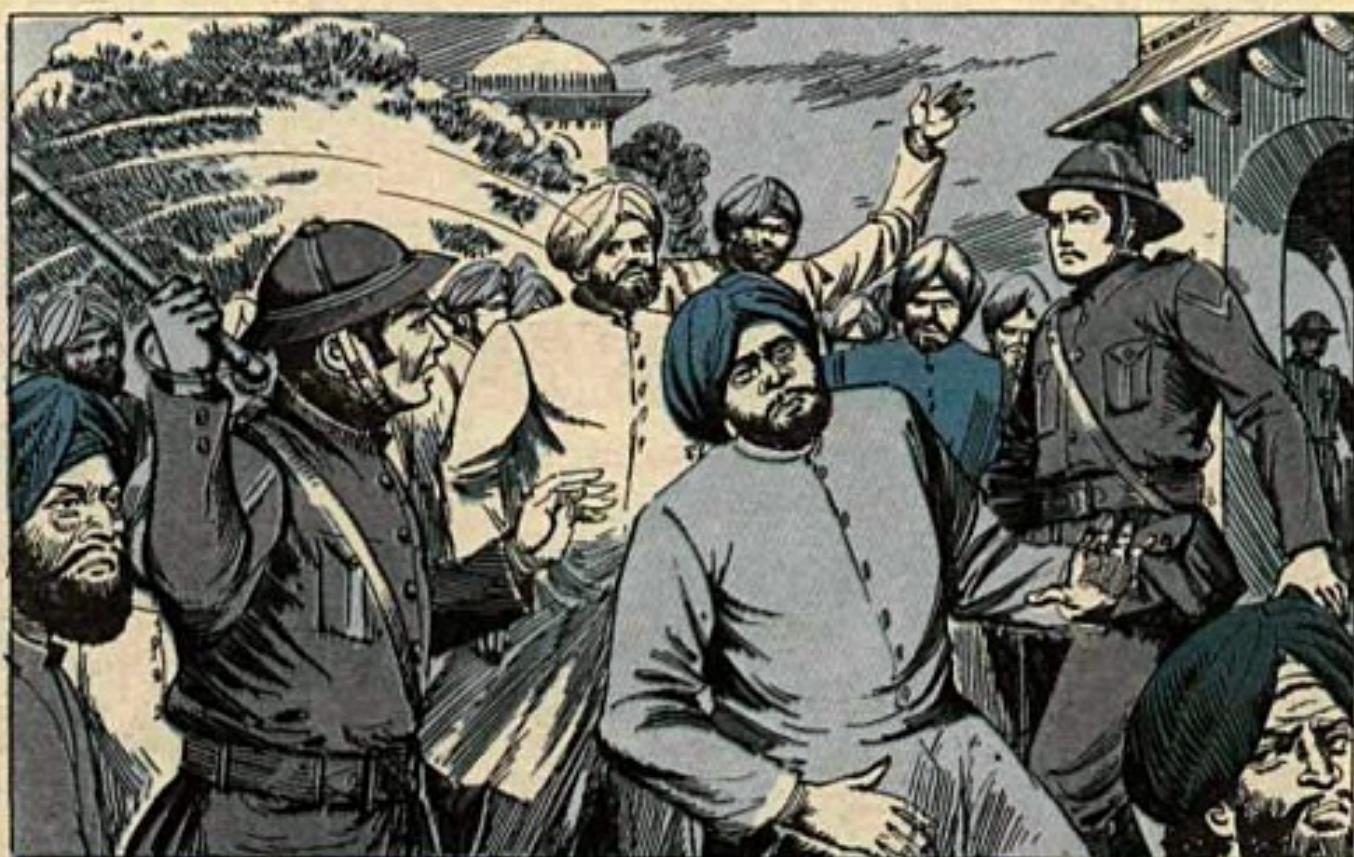
दिया। कुछ साल तक आन्दोलन चलता रहा। अन्त में सिखों की ही विजय हुई।

नेहरू की गिरफ्तारी का, इस गुरुद्वारा के आन्दोलन के साथ सीधा सम्बन्ध तो न था, पर अप्रत्यक्ष सम्बन्ध अवश्य था। पंजाब में पटियाला और नाभा की दो सिख रियासतें थीं, इन दोनों के राजाओं में व्यक्तिगत विरोध था। इस विरोध के कारण भारत सरकार ने नाभा के राजा को गद्दी से उतार दिया। उस रियासत के शासन के लिए एक गोरा आफिसर नियुक्त हुआ। इसके खिलाफ़ नाभा में और आसपास के ईलाके में आन्दोलन चला। इस आन्दोलन के सिलसिले में, जैते नामक जगह पर एक धार्मिक उत्सव होने जा रहा था, उस पर गोरे आफिसर ने पाबन्दी लगा दी और उसे रोक दिया।

इस कार्यवाही के विरुद्ध, फिर से उत्सव को चलाने के लिए सिखों के जत्थे, जैते भेजे गये। पोलीस उन जत्थों को लाठियों से पीटती गिरफ्तार करती और जंगल में जाकर छोड़ देती।

दिल्ली में कान्ग्रेस के अधिवेशन के बाद, जवाहरलाल नेहरू को मालूम हुआ कि कोई जत्था, नाभा जा रहा था। उसने उनको, जो कुछ वहाँ हो रहा था, स्वयं उसे देखने के लिए आने को कहा। जवाहरजी के साथ ए. टी. गिड़वानी और के. सन्थानम भी गये। वे जैत के पास के स्टेशन तक रेल गाड़ी में गये। फिर बैल गाड़ी में नाभा की सरहद के अन्दर गये। एक जत्था भी उसी समय वहाँ आया। जवाहरजी की पार्टी, उनके साथ न जाकर, बैल गाड़ी में उनके पीछे पीछे जाने लगी।

# नवाबनन्दिनी

[ ६ ]

जगतसिंह कैद में पड़ा था। उसके हाथों में हथकड़ी थी और पैरों में बेड़ी, सूर्य और चन्द्रमा के दर्शन भी न होते थे। वह मानों जीवित गाड़ दिया गया था—शायद सब इच्छाओं का अन्त-सा हो गया था। उसका जीवन शायद वहीं खतम हो जायेगा—यह वह जानता था। पर उसमें आशा अभी न मरी थी, इससे पहिले बहुत से कष्ट उस पर आये थे, पर वे हट गये थे। दुर्दिन हमेशा नहीं रहते, अच्छे दिन फिर आते हैं।

तिलोत्तमा के कष्टों के बारे में सोचना, उसके लिए सब से बड़ा कष्ट था—अगर कोई तिलोत्तमा की खबर लाता या उसकी खबर तिलोत्तमा तक पहुँचाता, तो उसका कष्ट कुछ कम होता। पर यह कैसे सम्भव था? चिन्ता उसे इतनी सता रही थी कि वह सो न पाता था।

एक दिन रात को सवेरे के समय उसे कुछ नींद आई। इतने में उसको आहट सुनाई दी। इसके बाद तिलोत्तमा एक पुष्पमाला लेकर उसके पास आई। "मैंने तलवार दूर फेंक दी है, अब यह पुष्पमाला

दामोदर मुखर्जी

न कटेगी।" इतने में उसको किसी का "युवराज" पुकारना सुनाई दिया....यह सपना था। जगतसिंह ने जब आँखें खोलीं, तो उसका सपना काफ़ूर हो गया था और सामने तिलोत्तमा की जगह कैद का पहरेदार खड़ा था।

"क्यों भाई, अभी तो सवेरा भी नहीं हुआ है, क्या खबर लाये हो?"

"आपसे एक सन्यासी मिलना चाहते हैं?"

"उनको बुला लाते?"

"मेरी हिम्मत काफ़ी न थी।"

"तो फिर यह खबर मुझे क्यों दी?"

"वे सन्यासी कह रहे हैं कि अगर उनको अन्दर न आने दिया, तो महाराज को बड़ा गुस्सा आयेगा, राजकार्य बिगड़ जायेगा....वह सन्यासी कह रहे हैं।"

"तो मैं क्या करूँ?"

"मैं उनको अन्दर लाने की सोच रहा हूँ।"

"तो मुझसे क्यों कहते हो?"

"यह जानने के लिए आप उन्हें देखना चाहेंगे कि नहीं?"

"चाहे तुम किसी को भी अन्दर लाओ, मुझे कोई एतराज नहीं है।"

पहरेदार चला गया और अभिरामस्वामी को साथ ले आया। उसको देखते ही जगतसिंह ने खड़े होकर, उसके चरण छुये। "यह क्या? आप यहाँ कैसे आये?"

"मैं यहाँ अधिक देर नहीं रह सकता। इसलिए असली बात जल्दी ही बता देता हूँ। जब से तुम्हारी सज़ा के बारे में सुना है, तभी से मैं यहाँ रह रहा हूँ।"

"मन्थारण में सब ठीक हैं न?"

"तुम्हारे लिए सब दुःखी हैं। तिलोत्तमा के दुःख का कोई अन्त नहीं है। मेरे

आने के बाद, मेरा शिष्य दिग्गज विमला से एक चिट्ठी लाया है। इसी आशा में तिलोत्तमा जीवित है कि कभी न कभी तुम्हारी रिहाई होगी ही....यह विमला ने लिखा है।"

"आप इतने दिनों से यहाँ किस लिए हैं?"

"एक इसलिए कि तुम्हें देख सकूँ, दूसरे इसलिए कि तुम्हारे छुटकारे के लिए कोई उपाय सोच निकालूँ।"

"आप मुझे कैसे देख सके?"

"कैद के पहरेदार को मैंने खूब ईनाम दिया है। तुम से थोड़ी देर बात करने के लिए ही वह माना है।"

"मैं नहीं सोचता कि आप मुझे छुड़ा सकेंगे। क्यों फिजूल तकलीफ़ उठाते हैं?"

अभिरामस्वामी ने अपने झोले में से एक कागज़ निकालकर, कहा—"इतने निराश न हो। तुम इस कागज़ पर दस्तखत करो। शायद इसका नतीज़ा अच्छा ही निकले।"

"क्या करने जा रहे हैं?"

"बादशाह के दरबार में जाकर कोशिश करूँगा।"

"वहाँ हमारी कौन मदद करेगा?"

"नवाबनन्दिनी अयाशा, उसकी सलाह पर ही यह सब किया जा रहा है।"

जगतसिंह ने चकित होकर पूछा—"तुमने उसकी मदद कैसे पायी?"

"मैंने नहीं पायी। तुम्हें छुड़ाने के लिए, वह ज़मीन आसमान एक कर रही है। मैं केवल उसकी आज्ञा पालन कर रहा हूँ। वह अभी पटना में ही है। तुम्हारी दर्ख्वास्त लेकर वह बादशाह के पास जायेगी। वहाँ सब ठीक हो जायेगा और तुम रिहा कर दिये जाओगे।"

इस कागज़ पर दस्तखत करो। तभी कुछ किया जा सकता है।" अभिरामस्वामी ने कहा।

जगतसिंह के दस्तखत किये हुए कागज़ को अभिरामस्वामी अपने झोले में रख रहा था कि पहरेदार उससे जल्दी जाने के लिए कहने लगा। अभिरामस्वामी न रह सका। उसे जाना पड़ा।

मानसिंह ने सगर्व, अपने लड़के को आजीवन दण्ड देकर सबको आश्चर्य में डाल दिया था। अकबर बादशाह को प्रसन्न कर दिया था। वह बड़ा न्यायशील कहलाया जाने लगा था, पर उसके मन में शान्ति न थी—इसके कई कारण थे। जगतसिंह उसका इकलौता लड़का था, जो कुछ उसने राजनैतिक कार्य किये थे, उसका कोई कारण अवश्य होगा, पर उसने उसे सफाई देने का कोई मौका न दिया था। मानसिंह ने जो सुनवायी की थी, वह सुनवायी ही न थी। मानसिंह की नज़र में, जगतसिंह का असली अपराध था, दुर्गेशनन्दिनी तिलोत्तमा से विवाह करना, इस अपराध को मानसिंह क्षमा न कर सकता था।

जगतसिंह न जान सका कैसे अयाशा के उपकार का ऋण चुकाये। "स्वामी, क्या मैं अयाशा को एक बार नहीं देख सकता?"

"देखने का उपाय तो है, पर वह तुम्हें देखेगी नहीं। उसका विश्वास है कि यदि तुमने एक दूसरे को देखा, तो तकलीफ़ ही होगी, कोई फायदा न होगा—इसलिए वह तुम्हारे लिए प्राण तक देने को तैयार है, पर तुम्हें देखेगी नहीं! बाकी बातों के बारे में, बाद में सोचा जा सकता है। पहिले

जब वह एक दिन ऊर्मिला के अन्तःपुर में गया, तो उसने कहा कि वह राजलक्ष्मी के बारे में चिन्तित थी। वह लड़की इस तरह रह रही है, जैसे वह उसकी लड़की हो।

"यही बात है, तो उसको अपने पास रख लो। उसके माँ-बाप को, इस बारे में खबर भिजवा दूँगा।"

"उसको हमारे पास रखने मात्र से क्या सब तकलीफें दूर हो जायेंगी? उनकी तकलीफों के बारे में भी तो सोचना है?" ऊर्मिला ने कहा।

"उसको क्या तकलीफ है?"

"उसके पास सौन्दर्य है। गुण है। पर अभागिन है। उसके पति ने उसके साथ बड़े चाव से शादी की। पर अब वह कह रहा है कि उसका कुल नीचा है, वह उसके साथ रह नहीं रहा है।"

"क्या उसके कुल में कोई दोष है?"

"ज़हाँ तक मैं जानती हूँ, कोई खास दोष नहीं है। अगर मान लो, कोई है भी, तो उसके बारे में यह विचारी क्या कर सकती है? अगर वंश में कोई दोष है, तो क्या लड़की के गुणों को भी नहीं देखा जाता?"

"इतनी अच्छी लड़की को छोड़ देना अच्छा नहीं है। उसका पति क्या करता है?"

"आपके नीचे सैनिक है। यदि आपकी कृपा हुई, तो इस लड़की के कष्ट दूर हो जायेंगे।"

"यदि वह मेरे आधीन सैनिक है, तो मैं यह कर सकता हूँ। उसके बन्धु-बान्धवों को बुलाकर, सबके सामने उससे मनवा लूँगा कि वह राजलक्ष्मी को स्वीकार करे। तुम फिक्र न करो। उसके बाद हमारा क्या होगा? पति आकर उसको ले जायेगा।

वह तुम्हारे पास नहीं रह सकेगी! इस बारे में भी सोच लो।"

"उसकी कोई बात नहीं, वह हमारे साथ रहेगी। जब उसका मुँह आनन्द से चमकेगा, तब मैं भी खुश होऊँगी। आपको मुझे अवश्य सन्तुष्ट करना चाहिए।" कहते कहते, ऊर्मिला की आँखों में तरी आ गयी।

मानसिंह ने उनका हाथ पकड़कर कहा—"मैं ज़रूर तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा—इसमें कोई शक नहीं। यदि इस कारण मेरी बदनामी भी हुई, तब भी मुझे कोई परवाह नहीं है। ठीक है न?"

"महाराज, तो तिलोत्तमा को अपनी बहू बनाइये। अपना वचन रखिये।" ऊर्मिला ने कहा।

"अब भला तिलोत्तमा की बात क्यों उठी है?"

राजलक्ष्मी, महाराज पैरों पर पकड़कर, रोने लगी।

"हाँ महाराज, राजलक्ष्मी ही आपकी बहू तिलोत्तमा है।" ऊर्मिला ने कहा।

मानसिंह ने मुँह नीचे कर लिया, थोड़ी देर सोचने के बाद उसने कहा—"तुम्हारी इच्छा ठुकराऊँगा नहीं, जो वचन दिया है, उसे पूरा करूँगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है। आज से उसको रानीवास की सब सुविधायें मिलेंगी।"

"इसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगी।" तिलोत्तमा ने कहा।

मानसिंह को गुप्तचरों द्वारा मालूम हुआ कि नवाबनन्दिनी पटना आयी हुई थी और किसी धनी पठान के घर ठहरी हुई थी। पठानों और मुगलों में सम्बन्ध थे। वे खुले आम मिलते जुलते थे। परन्तु यदि अयाशा सूचित करके आती, तो उसका वह सब स्वागत होता, जिसका कतलूखान

की लड़की के नाते वह अधिकारिणी थी, क्योंकि वह छुपी हुई थी, इसलिए उस स्वागत की ज़रूरत ही न हुई। फिर भी, जो पठान बेन्गाल में मुगलों के नीचे थे, अपनी खुशी से न थे और उड़ीसा के पठान अपनी स्वतन्त्रता के लिए युद्ध की तैयारी कर रहे थे। उस हालत में अयाशा का छुपे छुपे आकर, एक धनी पठान के घर रहना, सन्देहास्पद है। फिर भी मानसिंह ने इसकी कोई खास परवाह न की।

परन्तु एक सप्ताह बाद खबर मिली कि उड़ीसा के नवाब सुलेमानखान और उस्मानखान ने पुरी पर आक्रमण कर दिया था और रामचन्द्र देव भाग गया था। मानसिंह के चले जाने के बाद ही उस्मान खान ने यह काम करके, मुगल और पठानों की सन्धि रद्द कर दी थी।

यह सुनते ही मानसिंह को बड़ा गुस्सा आया। पठानों को संसार से मटियामेट करने के लिए, उसने अपने सैनिकों और सेनापतियों को युद्ध के लिए तैयारियाँ करने के लिए हुक्म दिया। मानसिंह, उस्मानखान को तड़पा तड़पा कर मार सकता था— चूँकि यदि अयाशा को कैद कर लिया गया, तो उस्मानखान छटपटाकर जान दे देगा। इसलिए ताजखान के मकान को घेरने के लिए कुछ सिपाही भेजे।
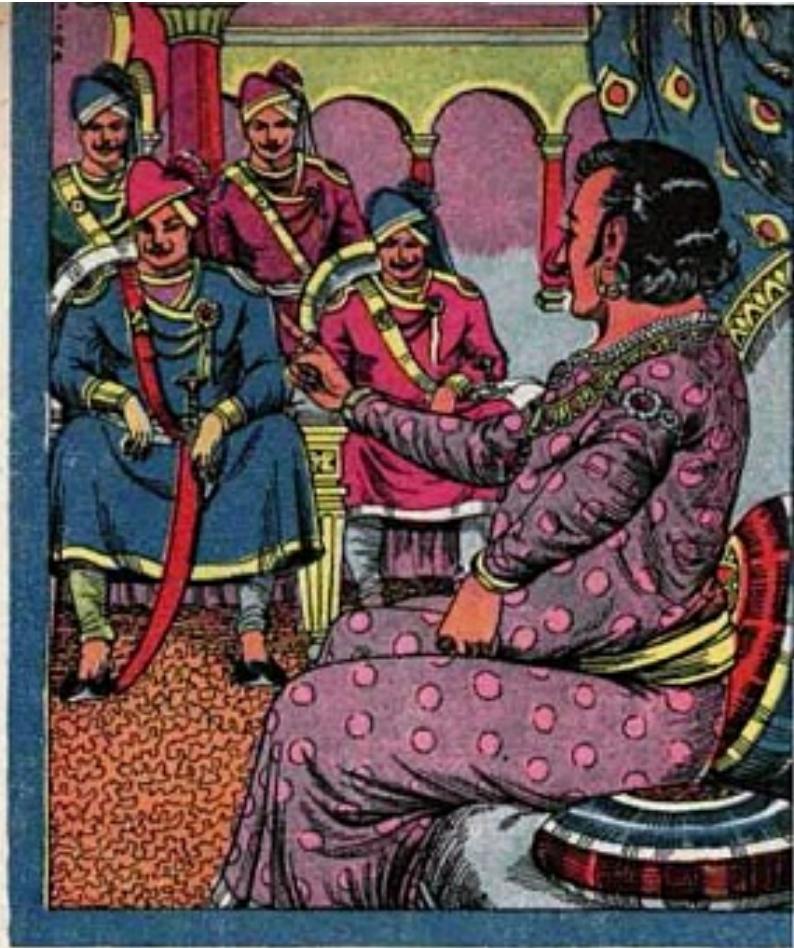
इस ताजखान के मकान में ही अयाशा थी, ताजखान काश्मीर बेगम का दूर का रिश्तेदार था। ताजखान की पत्नी कई बार कतलूखान के राजमहल में जा चुकी थी, उसने अयाशा को अपने घर एक बार बुलाया भी था, कई दिनों बाद, अयाशा ने उसे खत लिखा कि वह पटना आ रही थी। वह तदनुसार आई और उसके यहाँ ठहरी भी, ताजखान और उसकी पत्नी, उसका

बहुत अच्छी तरह आतिथ्य कर रहे थे। एक दिन शाम को, जब सैनिकों ने आकर उसका मकान घेर लिया, तो उसने इसका कारण पूछा। सैनिक कोई कारण न बता पाये।

अगले दिन सवेरे ताजखान, मानसिंह के पास गया। जब बताया कि सैनिकों ने उसका घर घेर लिया था, तो मानसिंह ने कहा—"तुम्हारे घर में कतलखान की लड़की है। उसको पकड़ने के लिए सैनिक गये हैं। यदि तुमने उसे, उनको सौंप दिया, तो घेरा उठा दिया जायेगा।"

ताजखान को यह बात बिल्कुल न समझ आई।

"महाराज, मैं व्यापार करता हूँ। हमारे घर कितने ही लोग आते जाते रहते हैं। यदि लोगों को आने जाने न दिया, तो मेरे व्यापार की बड़ी हानि होगी।" उसने कहा।

"ये सब बातें अनावश्यक हैं। अयाशा को सैनिकों के साथ भेजने की जिम्मेवारी तुम पर है। उसका किसी भी प्रकार अपमान नहीं होना चाहिए। वह हमारे अन्त:पुर में रहेगी।" मानसिंह ने कहा।

"जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, मैं अपने अतिथि को नहीं दूँगा।" कहकर, ताजखान सैनिकों के साथ घर चला गया।

यह बात अयाशा को मालूम हुई। उसने ताजखान से कहा कि वह मानसिंह को देखना चाहती थी। जब उसके लिए आवश्यक व्यवस्था ही गई, तो वह और ताजखान दो दासियों को साथ लेकर, सैनिकों के साथ मानसिंह महाराजा के पास आये।

[अभी है]
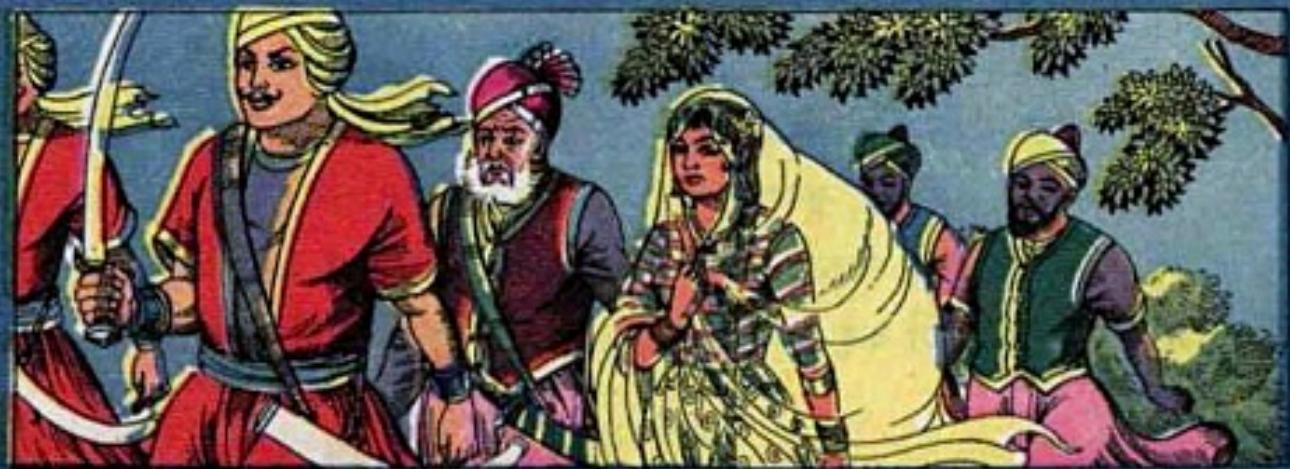
# वर प्रसाद

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा, पेड़ के पास जाकर, पेड़ पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम किसी अद्‌भुत शक्ति को प्राप्त करने के लिए इस रात के समय इतना कष्ट उठा रहे हो। पर जब वह शक्ति तुम्हारे हाथ आ जाये, तो तुम खो न बैठना। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उत्पल की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

नर्मदा के किनारे, जंगल में उत्पल और उसकी माँ रहा करते थे। उत्पल जंगल में जाकर फल, कन्द मूल लाया करता। उससे वे पेट भर लिया करते और यूँ गुज़ारा कर लिया करते।

## वेताल कथाएँ
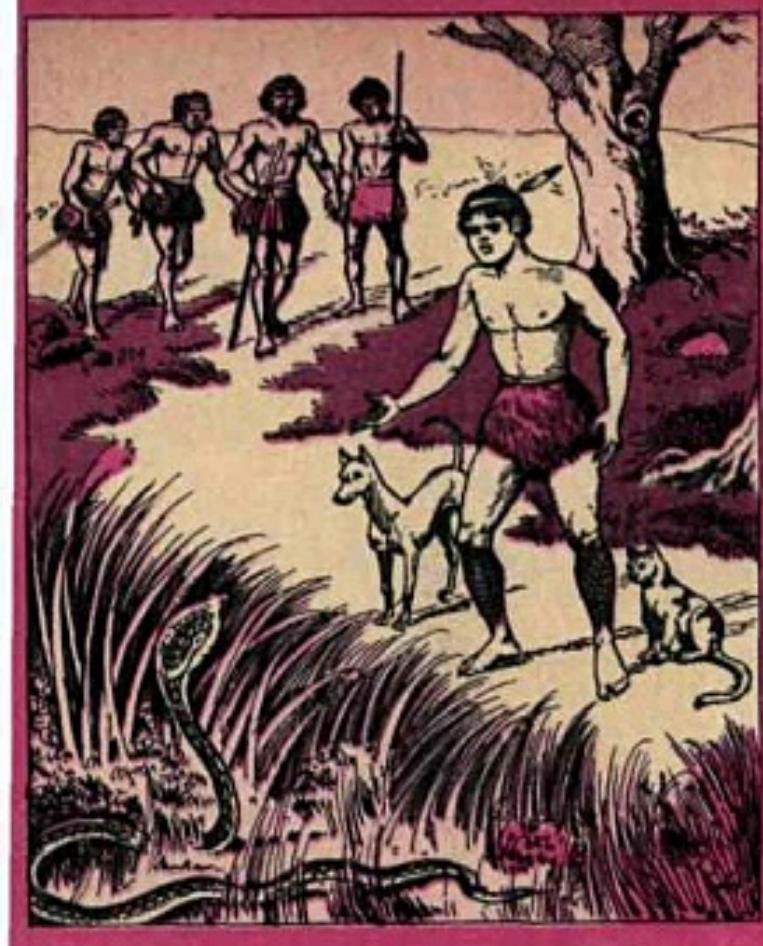
उत्पल का कोई दोस्त न था। इसलिए उसने एक कुत्ता और बिल्ली पाल ली और हमेशा उनको साथ लिए लिए फिरा करता—"अरे, हमारा ही गुज़ारा नहीं हो रहा है। तूने क्यों ये जानवर पाल लिए हैं ?" माँ उस पर बिगड़ा करती। पर उनके कारण माँ बेटे का लाभ ही हुआ करता। कुत्ता, खरगोशों को और पक्षियों का शिकार लाकर दिया करता और बिल्ली खाद्य पदार्थों को चूहों से बचाती। चूँकि और दोस्त न थे, इसलिए उत्पल हमेशा उनसे बातें किया करता। वे जवाब तो नहीं दे पाते थे, पर उसकी बात को समझ अवश्य पाते थे।

एक दिन उत्पल जंगल में दूर एक गाँव की ओर गया। वहाँ ग्रामवासियों ने जंगल काटकर खेती के लिए कुछ ज़मीन साफ़ कर ली थी। उस मैदान में ऊँची घास उग आयी थी। गाँववाले उस घास को काट रहे थे। पर उन्होंने एक ऊँची जगह घास न काटी, पर उसके चारों ओर उसे काटता देख, उत्पल ने पूछा—"क्यों नहीं, उस घास को काटते हो ?"

"उसमें साँप घुस गया है। पास गये तो न मालूम क्या करे, डर लग रहा है।" ग्रामवासियों ने कहा।

उत्पल को किसी भी जन्तु का डर न था। वह जंगल में हर तरह के जानवर रोज देखा करता। उसका उनके प्रति स्नेह ही था, पर न उनसे कोई भय था, न कोप ही। इसलिए वह घनी घास के पास गया, उसने कहा—"साँप, साँप बाहर आओ, मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा।" तुरत एक साँप घनी घास में से निकलकर उसके पास आया। उत्पल उसे अपने गले में डालकर घर ले गया।

"अरे क्या कुत्ते और बिल्ली काफ़ी नहीं हैं, जो अब एक साँप भी ले आये हो?" माँ ने पूछा।

"अच्छा साँप है। मैं उसे बहुत पसन्द हूँ।" उत्पल ने कहा।

रोज बीतते गये। साँप में उत्साह को कम होता देख, उत्पल ने कहा—"अरे क्यों, रोज इतने उदास रहते हो। क्या रंज है तुम्हें?" जैसे वह कुत्तों और बिल्ली से बात किया करता था उसने उससे बात तो की, पर उसे ख्याल न था कि वह मनुष्यों की भाषा में जवाब देगा।

"मैं एक नागराज का लड़का हूँ। मेरे पिता के सिर पर मणि है, इस कारण वह नागों का राजा है। ऐसी कोई इच्छा नहीं है, जो मेरे पिता की मणि पूरी न कर सके। उस तरह की मणि किसी और साँप के पास नहीं है। मैं एक बार साथ के नाग युवकों के साथ खेल रहा था कि गरुत्मन्त हमें देखकर बाण की तरह नीचे आया, सिवाय मेरे सब उसके चुंगल से निकल भागे। मुझे पैरों में फँसाकर गरुत्मन्त उड़ता उड़ता इधर आया। गरुत्मन्त कुछ अन्यमनस्क-सा था कि मैं उसके पैरों से निकलकर, घास में जा गिरा। मैं अपने घर जाना चाहता हूँ। पर अकेला जा नहीं सकता हूँ। रास्ता बहुत भयंकर है। खतरनाक भी।" साँप ने कहा।
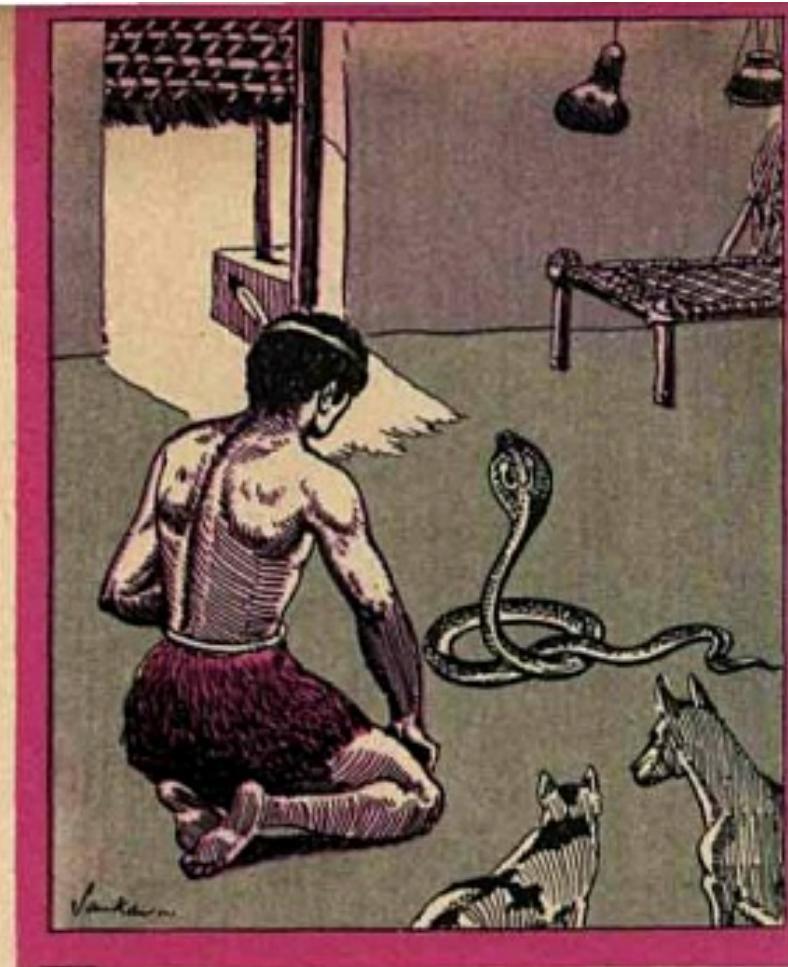
"यह बात तुमने पहिले क्यों नहीं बताई? दुःखी मत हो। मैं जैसे भी हो तुम्हें घर पहुँचा दूँगा।" कहकर उत्पल नाग युवराज को गले में डालकर निकल पड़ा। साँप ने उसे सीधे उत्तर की ओर जाने के लिए कहा।
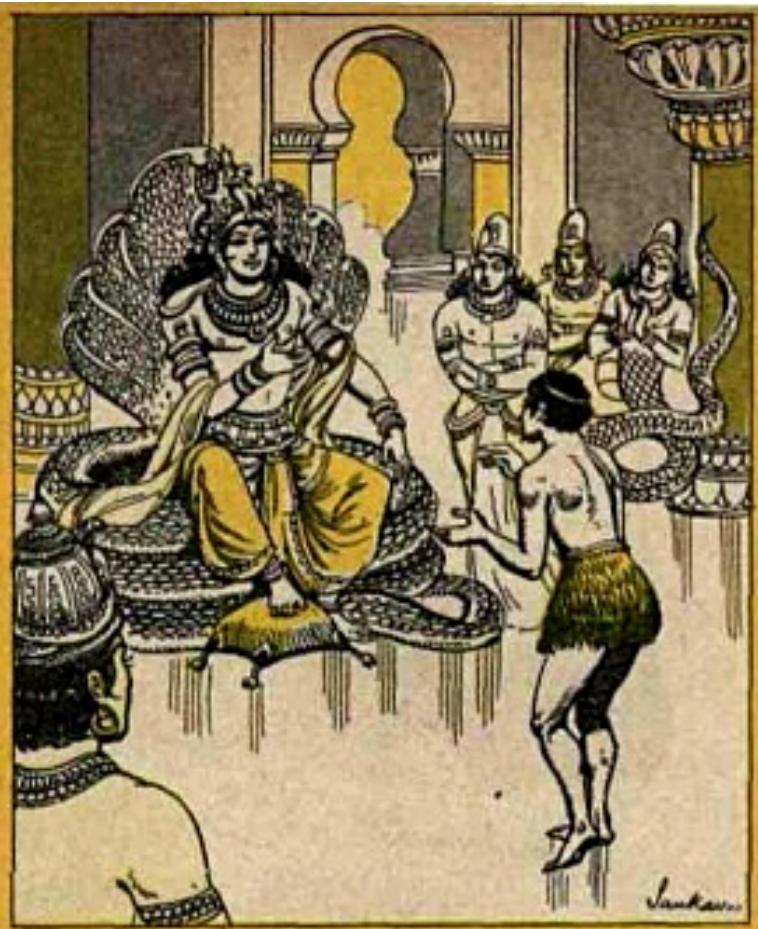
उत्पल बहुत दिन तक चलता रहा। कुछ दूर जाने के बाद रास्ता बहुत भयंकर हो गया। खाना भी न था। ऐसे कीड़े जिन्हें उसने पहिले कभी न देखे थे, उस पर मँडराये और उन्होंने उसका खून चूसा। सब कष्ट झेलता उत्पल नाग राजा के प्रदेश में जा पहुँचा। वहाँ उसे बहुत भयंकर साँप दिखाई दिये। परन्तु उसे किसी ने न छेड़ा। उसके गले के साँप ने उनसे कुछ कहा।

एक विशाल मैदान के बीच में नाग राजा का महल था। वह बड़ा सुन्दर था। धूप में चमचमा रहा था। उत्पल ने नागराज और उसके सिर की मणि को देखा। वह सूर्य की तरह चमक रहा था।

अपने लड़के को फिर पाकर नागराज बड़ा खुश हुआ। उसने उत्पल से जो मर्ज़ी हो, माँगने के लिए कहा।

"आप अपने सिर की मणि दीजिये।" उत्पल ने कहा। यद्यपि वह तब तक अपने जीवन में असन्तुष्ट न था, पर जब उसको मालूम हुआ कि कोई ऐसी इच्छा न थी, जो उससे वह पूरा न कर सके, उसके मन में यकायक कितनी ही इच्छायें पैदा हो गईं।

नागराज ने कुछ सोचकर कहा—"मैं अपनी मणि दे देता हूँ। परन्तु यह वचन दो कि जिस दिन यह तुम्हारे उपयोग में न आये, उस दिन इसे वापिस कर दोगे।"

उत्पल इसके लिए मान गया, नागराज से मणि लेकर उसने चाहा कि वह अगले क्षण अपने घर जा पहुँचे। उसकी इच्छा पूरी हो गई। अब उसके जीवन में कोई कमी न थी। मणि के प्रभाव से, खाने के लिए अच्छी चीज़ें, पहिनने के लिए अच्छे कपड़े सब मिल गये।

परन्तु उत्पल को कुछ असन्तोष होने लगा। वह अब जंगली जीवन से ऊब गया था। संसार में बड़े बड़े नगर थे। राजमहल थे, बड़ी सभ्यता थी। जब मेरे हाथ में मणि है, तो क्यों मैं जंगली की तरह जीऊँ—उसे लगा। इसलिए उसने अच्छे वस्त्र और आभूषण पहिने। बढ़िया घोड़े पर सवार होकर मणि को साथ लेकर निकल पड़ा।

वह सीधे अपने देश के राजा के यहाँ पहुँचा। उसका आडम्बर देखकर, राजा ने उसका खूब स्वागत किया। परन्तु राजा की लड़की और दरबारी थोड़ी ही देर में जान गये कि उत्पल असभ्य जंगली था।

उत्पल कुछ दिन राजा के यहाँ अतिथि रहा। फिर उसने एक दिन राजा से कहा—"मैं आपकी लड़की से शादी करना चाहता हूँ।"

इस बात पर राजा हक्का बक्का रह गया। उसकी हिम्मत पर क्या कहे, उसे न सूझा। जो इतने दिन अतिथि रहा था, उससे लट्ठ मारकर बात करना उसने ठीक न समझा। उसने कहा—"तुम जानते ही हो, यहाँ
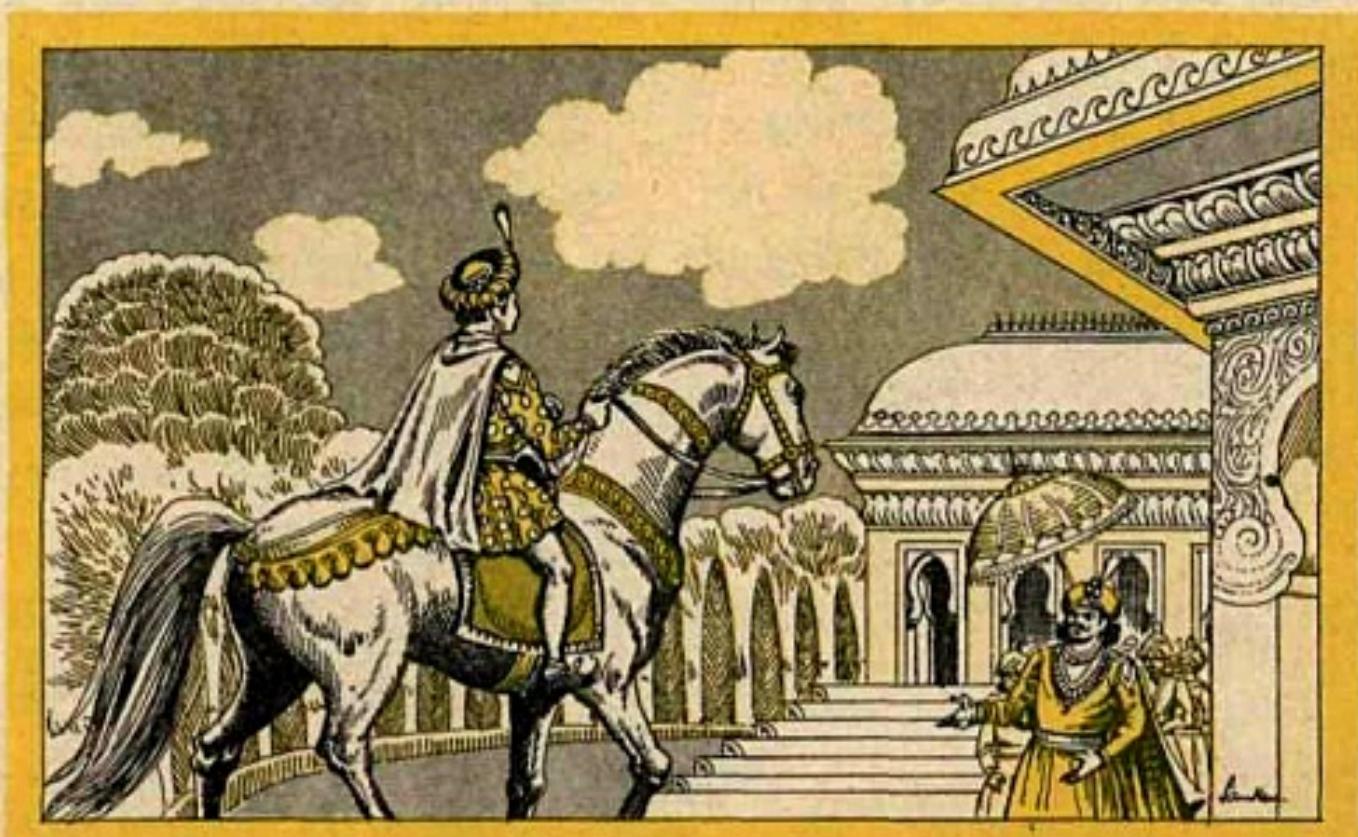
से तीन मील की दूरी पर एक पहाड़ है, जानते हो न। उसके चारों ओर तीस एकड़ बँजर भूमि है। उस पहाड़ को आधा भूमि में गाड़ दो। उस पर एक संगमरमर का किला बनाओ और यदि तीस एकड़ भूमि को तुमने उपजाऊ बना दिया, तो जैसा तुम चाह रहे हो, वैसे ही मैं अदनी लड़की का तुमसे विवाह कर दूँगा।"

राजा ने सोचा कि उसने मानों कहा हो। "यदि तुम हमारी लड़की से शादी करना चाहते हो, तो हज़ार जन्म लेकर, तपस्या करनी होगी।" पर उत्पल ने यह अर्थ न लिया था। उसने राजकुमारी से विवाह करने के लिए उसे शर्त समझा। "हाँ, कर दूँगा। यह भी कितना बड़ा काम है?" दरबार में सब छुपे छुपे हँसे।

परन्तु अगले दिन उत्पल ने दरबार में कहा—"जो आपने कहा था, मैंने कर दिया है। अब आप अपनी लड़की और मेरे विवाह की व्यवस्था कीजिये।" राजा और उसके दरबारी भौंचक्के रह गये। सब वहाँ गये। पहाड़ की ऊँचाई आधी हो गई थी। उस पर सुन्दर संगमरमर का किला था। पहाड़ के चारों ओर उपजाऊ भूमि ही न थी, उसमें अच्छी फसल भी खड़ी थी।

राजा को अपनी बात पूरी करनी पड़ी, राजकुमारी भी उत्पल से शादी करने के लिए मान गई। दोनों का विवाह हुआ। परन्तु उत्पल ने जिस सुख की आशा की थी, वह न मिला। उससे राजकुमारी ने कहा—"तुम जंगली हो। असभ्य हो। तुम में किसी प्रकार का पाण्डित्य नहीं है।"

"उन सबसे तुम्हें क्या वास्ता है? मेरे पास ऐसी शक्ति है, जिससे जो मैं चाहूँ,

उसे पा सकता हूँ। इसलिए तुम चूँकि मेरी पत्नी हो, तुम्हें भी कोई कमी न रहेगी।" उत्पल ने कहा।

"यह शक्ति तुम्हारे पास कैसे आयी? वह अच्छी शक्ति है या बुरी शक्ति है, यह कैसे मालूम होगा!" राजकुमारी ने कहा।

उसको खुश करने के लिए, उत्पल ने अपनी पत्नी को वह मणि दिखाई और उसकी महिमा भी बतायी। उसने उसे देखकर, ऐसा दिखाया जैसे बहुत सन्तुष्ट हो। उसकी बड़ी प्रशंसा भी की। उस दिन शाम को, उसको उसने स्वयं भोजन परोसा। भोजन में उसने मस्ती की दवा मिला दी। भोजन करते करते, उत्पल बेहोश हो गया। राजकुमारी ने उसकी मणि ले ली। "इस गन्दे पति से पीछा छूटे। उसने जो कुछ इसके प्रभाव से पाया है, वह सब चला जाये।" उसने इच्छा की।

अगले दिन जब उत्पल को होश आया, तो जंगल में वह अपनी झोंपड़ी में था। उस झोंपड़ी में कुत्ता और बिल्ली ही रह गये थे। उसकी माँ कुछ दिन पहिले गुज़र गई थी। उसे पहिले अपनी परिस्थिति
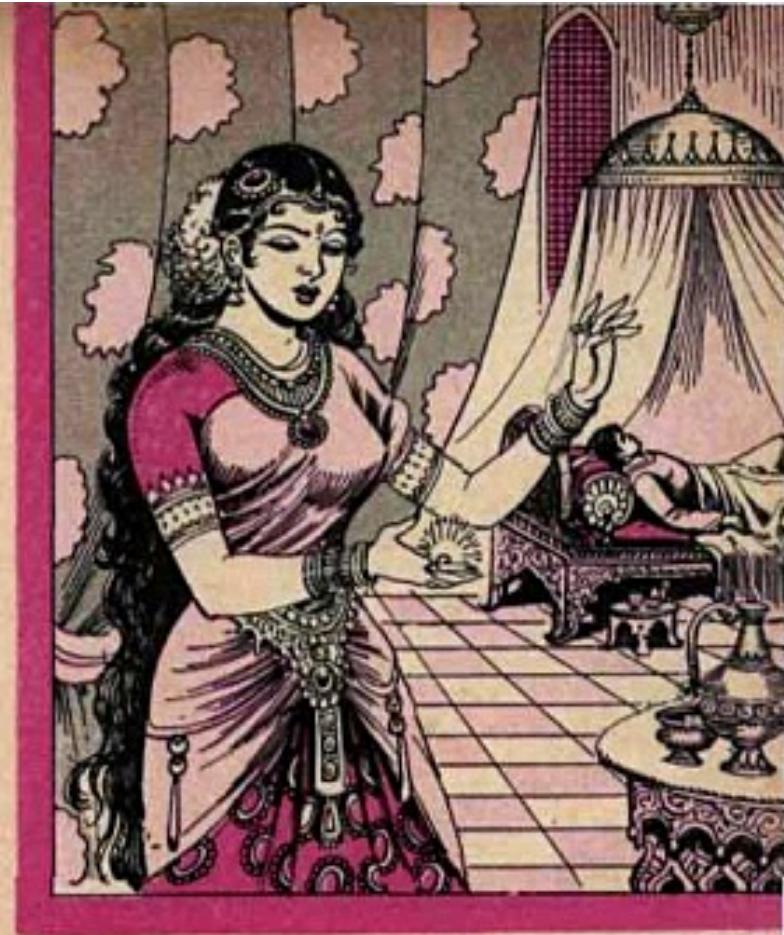
बिल्कुल न समझ आयी। पर सोचने पर वह जान गया कि राजकुमारी ने उसको धोखा दिया था और मणि भी हथिया ली थी। अपने कष्टों को बताने के लिए सिवाय कुत्ते और बिल्ली के कोई न था इसलिए उसने उनसे ही सारी बातें कह दीं।

उस दिन रात को कुत्ता और बिल्ली राजमहल में पहुँचे। राजमहल के चारों ओर किले की-सी दीवार थी और दीवार के चारों ओर खाई थी। खाई पर पुल था, पर जब वे उस पर गये, तो पहरेदार ने उन्हें भगा दिया।

नौकरों को बुलाया। इससे पहिले कि वे बिल्ली का पीछा करते, कुत्ता बिल्ली को पीठ पर चढ़ा, खाई पर गया और दोनों घर की ओर निकल पड़े। सवेरे घर पहुँचकर, उन्होंने मणि अपने मालिक को दे दी।

"संसार में तुम दोनों ही मेरे अच्छे मित्र हो।" कहकर, उत्पल ने उनका प्रेम से आलिंगन किया। फिर वह राजा के पास गया और राजकुमारी ने जो धोखा दिया था, उसके बारे में बताया।

राजा को यह सब बिल्कुल न मालूम था। "वह तुम्हारी पत्नी है, उसको, जैसा तुम चाहो, वैसा दण्ड दो।" उसने कहा।

"उसने इच्छापूर्वक मुझसे शादी न की थी। हमारी शादी ही न हुई थी। आप उसका किसी और अच्छे युवक से शादी कर दीजिये। यही मैं कहने आया हूँ।" उत्पल ने कहा।

वह मणि के प्रभाव से, कुत्ते और बिल्ली को साथ लेकर, नागराज के प्रदेश में पहुँचा। उसने नागराज को मणि वापिस देकर कहा—"मुझे अब इस मणि से कोई काम नहीं है। सिवाय, इस इच्छा के कि मैं इस कुत्ते और बिल्ली को लेकर, कहीं निकल जाऊँ और कोई इच्छा नहीं है।"

दोनों खाई की पिछली ओर गये। कुत्ता, बिल्ली को अपनी पीठ पर बिठाकर, खाई तैर गया। दोनों के अन्दर पहुँच जाने के बाद, बिल्ली सारे कमरों में घूमती घूमती राजकुमारी के कमरे में पहुँची। मणि अपने हाथ में रखकर, राजकुमारी सो रही थी। बिल्ली बाहर गई और एक चूहा पकड़कर लाकर, उस पर छोड़ दिया। जब चूहा उस पर बिल-बिलाने लगा, तो वह घबराकर उठी और उसके हाथ की मणि नीचे गिर गई। बिल्ली उसको मुख में रखकर बिजली हो गई। राजकुमारी ने

"अगर यही बात है, तो तुम तीनों हमारे पास रह जाओ। हमारा लड़का भी हमेशा तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता है।" नागराज ने कहा।

उत्पल उसकी बात न ठुकरा सका। वह अपने कुत्ते और बिल्ली के साथ नाग राज्य में ही रहने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे यह सन्देह है। उत्पल ने जब उसके हाथ में मणि आ गयी, क्यों नहीं उसके आधार पर सुख अनुभव किया, क्यों उसने उसे नागराज को वापिस कर दिया? इस प्रश्न का उत्तर जानबूझकर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"इस मणि ने उसकी इच्छायें भले ही पूरी की हों, पर उत्पल के सुख और सन्तोष को वे न बढ़ा सकीं। उसकी इच्छाओं ने उसका असन्तोष बढ़ाया। क्योंकि इच्छायें बढ़ गई थीं, इसलिए वह अपनी माँ, कुत्ता और बिल्ली को छोड़कर चला गया था। माँ जब मर रही थी, तब भी वह उसके पास न था। वह मणि, मानव स्वभाव भी न बदल सकी। सम्पत्ति थी, पर उसका जंगली स्वभाव न बदला। उसकी प्रकृति न बदली, उसी तरह मणि ने राजकुमारी को उसका पत्नी तो बना दिया था, पर वह उसका मन, उसके प्रति न मोड़ सकी थी। यह सब जानकर ही उस मणि को वापिस दे दिया था।"

राजा का मौन इस प्रकार भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
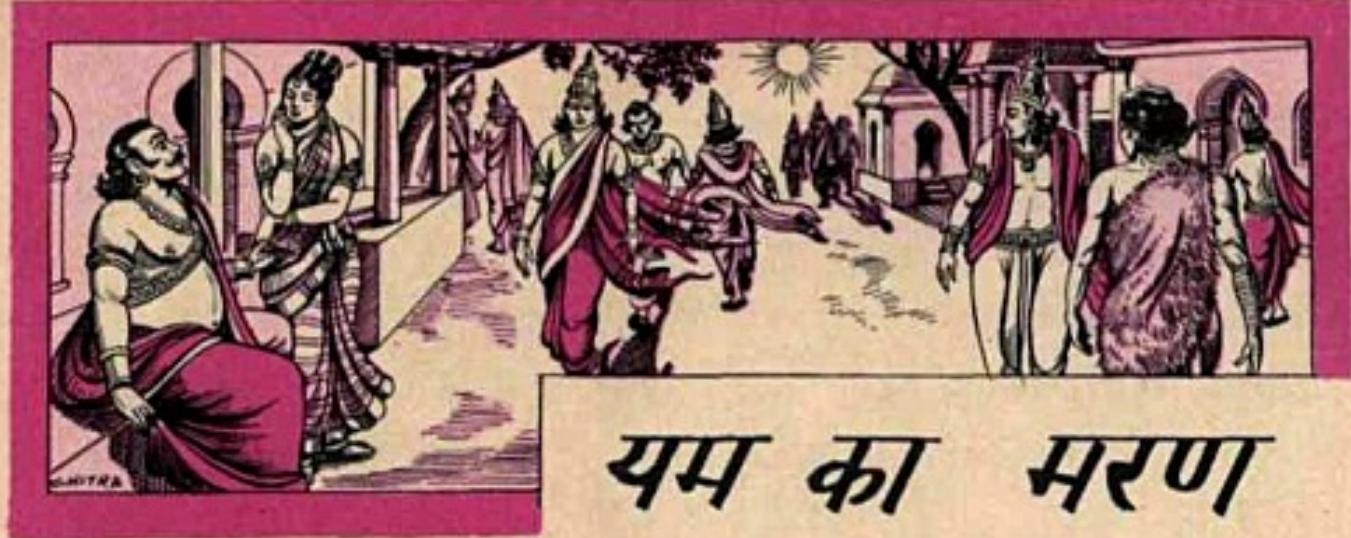
# यम का मरण

आदि काल में देवताओं की सन्तान, मानव, भूमि के उत्तर ध्रुव प्रान्त में रहा करते थे, ताकि वे देवताओं के पास रह सकें। उस प्रान्त में हमेशा सूर्य प्रकाशित रहता। अतः वहाँ काल का परिमाण न था। वहाँ के आदि मानव दम्पत्ति थे, यम और उसकी पत्नी यमी। यम सूर्य का लड़का था।

कुछ दिनों बाद यम मर गया। मनुष्यों में क्योंकि वह पहिली मृत्यु थी, इसलिए शेष मानव उसे समझ न सके। तब देवताओं ने आकर कहा कि वे मानव जिन्होंने अमृत नहीं पिया है वे यम की तरह ही चले जायेंगे। वह मानवों की मरण दशा है। मरण के बाद, मानव शरीर पंचभूतों में मिल जाते हैं।

मानवों में सर्व प्रथम क्योंकि यम की मृत्यु हुई थी, इसलिए ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताओं ने यम का आदर करना चाहा। उसको उन्होंने दिक्पालकों में एक नियुक्त किया। पितृलोक का अधिपति भी बनाया।

इस बीच यमी, भूमि पर पति के लिए लगातार रोने लगी। क्योंकि उन दिनों काल नहीं था यम के बाद जो कुछ घटनायें हुई थीं, उनके बारे में भी वह न जानती थी, इसलिए वह अपने पति की मृत्यु को बिल्कुल न भुला सकी।

"मनुष्य के लिए मृत्यु अवश्यम्भावी है। मरे हुए फिर नहीं जीते हैं, यह पहिले ही देवताओं ने बता दिया था। यम के बाद और भी बहुत-से मनुष्य मर गये। अब तुम यम को भूल जाओ।" साथ के मनुष्यों ने यमी को समझाया।

परन्तु यमी उनसे कहा करती—"कैसे भूलूँ? अभी तो यम गुज़रे हैं।" वह और भी दुःखी होने लगी। यमी की तरह और भी जिनके सम्बन्धी गुज़र गये थे अपने दुःख को छोड़ नहीं पाते थे।

यह देख देवताओं ने सोचा कि जब तक मनुष्यों के लिए काल नहीं बना दिया जाता है, तब तक वे दुःख से विमुक्त नहीं हो सकते। यह सोच उन्होंने सूर्य को अलग भेज दिया। तुरत रात्री ने आकर मनुष्यों के प्रदेश को घेर लिया।

रात्री के आने के कारण, मनुष्य सोये। उनका दुःख उस नींद में जाता रहा। परन्तु यह निर्णय न हुआ कि रात कितनी लम्बी हो। उस लम्बी रात में, राक्षस आते, और गौवों और धान्य को लूट ले जाते।

इसलिए देवताओं ने रात्री और दिन द्वारा काल को विभक्त किया। सूर्य को बुला लाने के लिए उषा देवी को भेजा। उषा देवी के पीछे सूर्य के आते ही दीर्घ रात्री खतम हो गई। उसके बाद, रात दिन एक के बाद एक आने लगा और इस प्रकार काल की स्थापना हुई।

तब भी रात के समय राक्षस आक्रमण करते और जो कोई उनको रोकता टोकता, वे उसे मार देते। तब मनुष्यों ने इन्द्र से शिकायत की। उसने रात के समय उनकी मदद करने के लिए अग्निहोत्र की व्यवस्था की।

काल की स्थापना के बाद, यमि ने अपने पति के लिए रोना धोना छोड़ दिया। परन्तु वह अपने पति को न भूल सकी। इसलिए यम साल में एक बार दीपावली, अमावस्या के बाद, अपनी पत्नी के पास आकर, उसका आतिथ्य स्वीकार करता है। वह दिन ही हमारे लिए यम द्वितीय है।
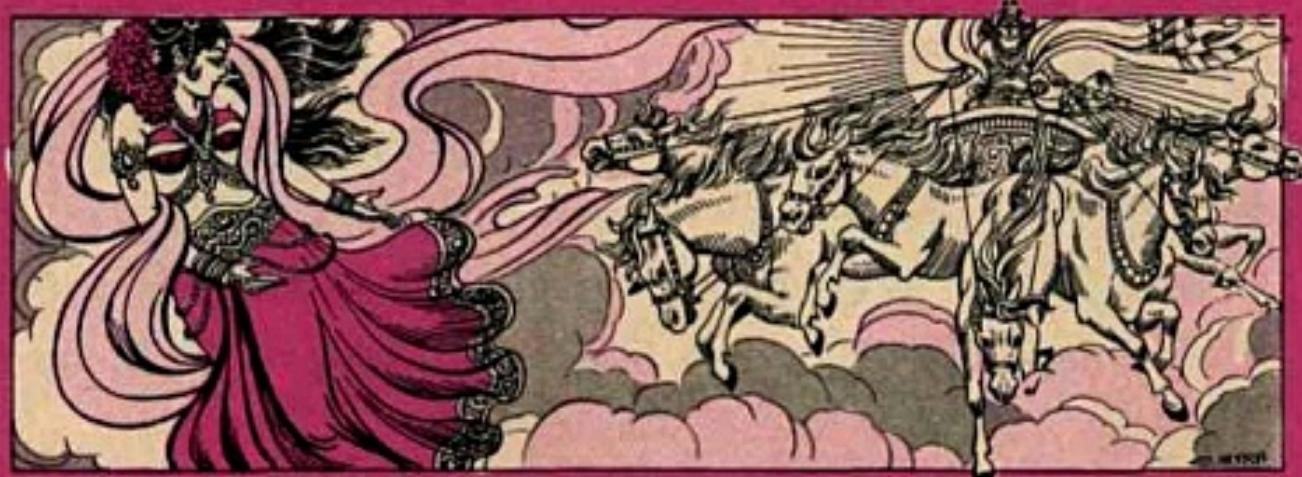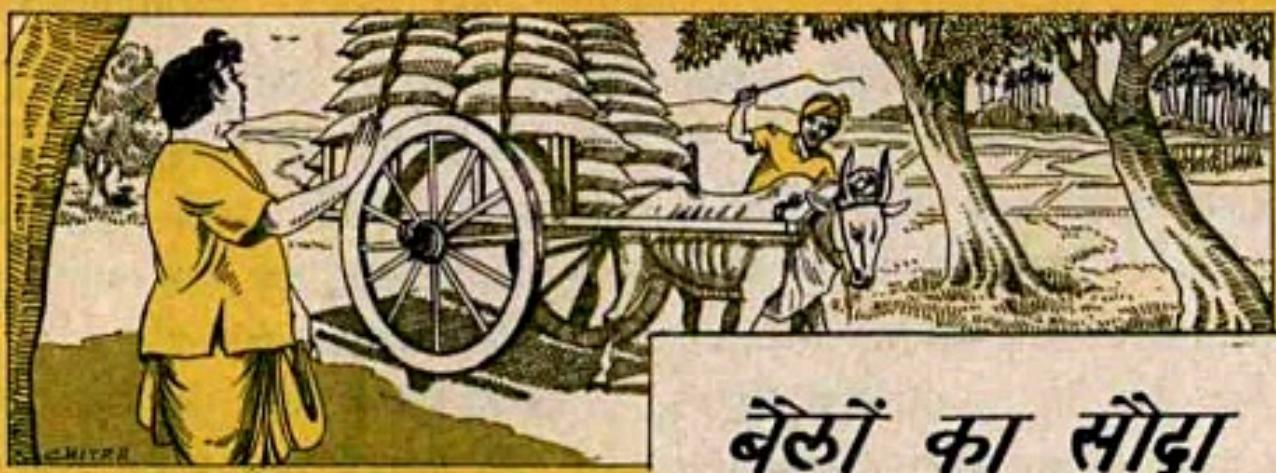
# बैलों का सौदा

एक बार पन्नालाल अपनी ससुराल गया। वहाँ खेतों से जो तीन सौ रुपये मिलने थे, उन्हें लेकर, घर की ओर आने लगा। रास्ते में उसने एक हृदय द्रावक दृश्य देखा।

रास्ते में एक गाड़ी थी। उसमें एक बैल जुता हुआ था। गाड़ी में चावल के बोरे रखे हुए थे। पन्नालाल यह न जान सका कि उतने सारे बोझ को, एक बैल उतनी दूर तक ही कैसे खींचकर लाया था।

उस निर्जन स्थल में पन्नालाल के दिखाई देते ही गाड़ीवाले ने उससे कहा—"मैं ज़रा नहर के पास जाकर, पानी पीकर आता हूँ। यह गाड़ी देखते रहिये।"

"अच्छा जाओ।" कहकर, पन्नालाल वहीं खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद, गाड़ीवाला पानी पीकर वहाँ आया। "शुक्र आपका, आजकल मदद करनेवाले ही कम हो गये हैं। गाड़ी धकेलकर मैंने चवन्नी देकर दो आदमियों को रखा, वे यहाँ तक धकेल कर लाये। फिर यह कहकर चले गये कि यह उनके बस का काम नहीं है। मैं अकेला भला क्या करूँ!" पन्नालाल से यह कहकर, वह "है, है" करता बैल को हाँकने लगा।

बैल ने गाड़ी खींचने की कोशिश तो की, पर खींच न सका। गाड़ीवाला बैल को पीटने लगा।

पन्नालाल ने गाड़ीवाले के हाथ की छड़ी लेकर कहा—"अरे, तुम भी क्या आदमी हो? तुमने जाकर पानी पी लिया, क्या इसका मतलब यह है कि बैल की

प्यास भी बुझ गई है?" वह बैल को जुये में से खोलकर और उसे नहर की ओर ले जाने लगा।

गाड़ीवाला शर्मिन्दा हुआ। उसने कहा—"जी, गलती हो गई। आप क्यों तकलीफ़ करते हैं? मैं ही बैल को पानी पिला लूँगा।" कहकर, उसने बैल की रस्सी हाथ में ले ली।

"प्यास के साथ शायद बैल को भूख भी लग रही हो। थोड़ी घास भी चराकर लाना। तुम्हारे आने तक मैं तुम्हारी गाड़ी देखता रहूँगा, जाओ।" पन्नालाल ने कहा।

कुछ देर बाद गाड़ीवाला बैल के साथ वापिस आया, उसे गाड़ी में जोतकर हाँकने लगा। पर बैल गाड़ी न खींच सका।

यह देख पन्नालाल ने कहा—"तुमने इतना सामान लादा है, जितना कि दो बैलों की गाड़ी में लादा जाता है। एक बैल कैसे खींचेगा? आधा यहाँ उतार दो, आधा पहिले पहुँचा दो, फिर बाकी माल ले जाना। मैं तुम्हारे माल की यहाँ रखवाली करूँगा।"

"न मालूम आप कौन हैं, जो भगवान की तरह मेरी मदद करने आये हैं। परन्तु इस समान में से कुछ नहीं उतारा जा सकता। इतना माल, इसी बैल से लिवा ले जाना है, ऐसी शर्त है।" गाड़ीवाले ने कहा।
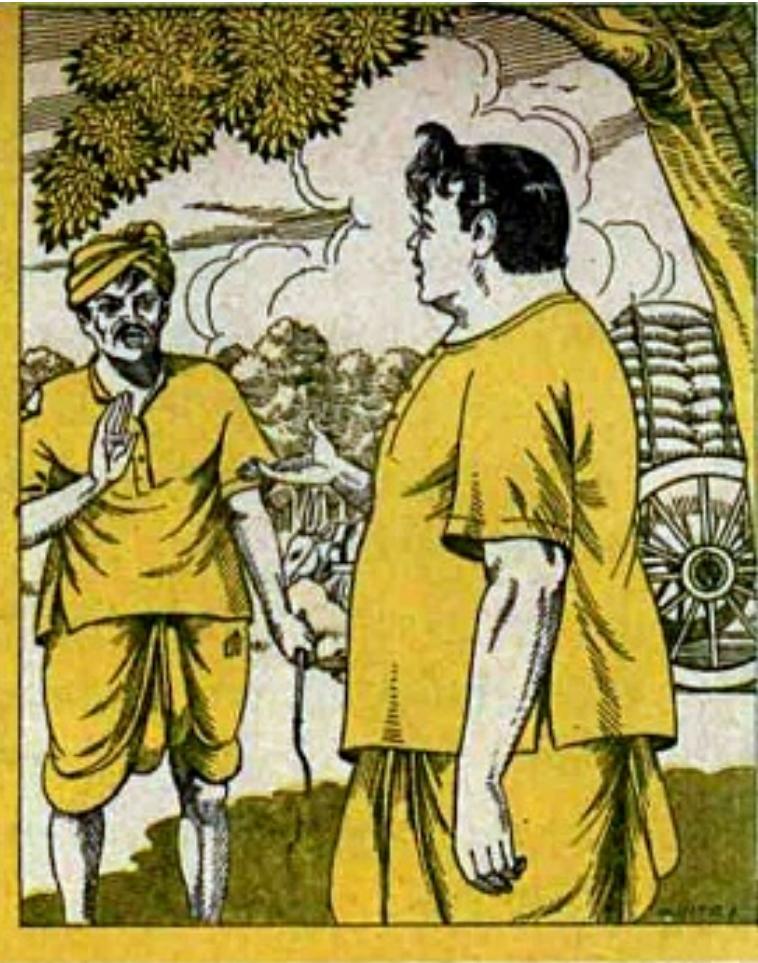
जब पन्नालाल ने पूछा कि वह क्या शर्त थी, उसके बारे में गाड़ीवाले ने बताया।

गाड़ीवाले का नाम एतन्ना था। वह गाड़ी रखकर, उसमें एक बैल जोतकर, उससे रोजी कमाया करता था। उसने बैल बेचकर कुछ माल खरीदा और उस माल को गाड़ी में रख, स्वयं उसे खींचता, उसे पहुँचाने की उसको सूझी। पास के गाँव के धनी, शरभाद्रि को उसने अपना बैल बेचना

चाहा। शरभाद्रि ने पूछा कि कितने में दोगे बैल। एतन्ना ने कहा—"सौ रुपये में!"

"अबे जा, इस दुबले बैल के लिए, जो एक बोरा धान नहीं खींच सकता, कौन भला सौ रुपये देगा?"

"यह न कहिये। जो बोझ यह बैल खींच सकता है, कोई और बैल खींच नहीं सकता। यदि यह न खींच सका, तो मैं अपने बैल को मुफ्त दे दूँगा।" एतन्ना ने शेखी मारी।

"तो, मैं कुछ माल की फहरिस्त देता हूँ। उसे शहर में एक साहुकार को देना और वह सब माल अपनी गाड़ी पर लाद कर, घर ले आओ। तब मैं तुम्हारे माँगे सौ रुपये तुम्हें दे दूँगा।" शरभाद्रि ने कहा।

बेअक्ल एतन्ना इसके लिए मान गया। फहरिस्त के मुताबिक उसने माल लिया। उसे गाड़ी पर लाद, बैल जोता। बैल गाड़ी न खींच सका। गाड़ी को दो मील जाना था। एतन्ना ने दो कुलियों को तय किया और उनसे गाड़ी खिंचवाता आया। एक मील आने के बाद, उन दोनों ने कहा—"अब हम नहीं खींच सकते।" और वे चले गये। अभी एक और मील जाना
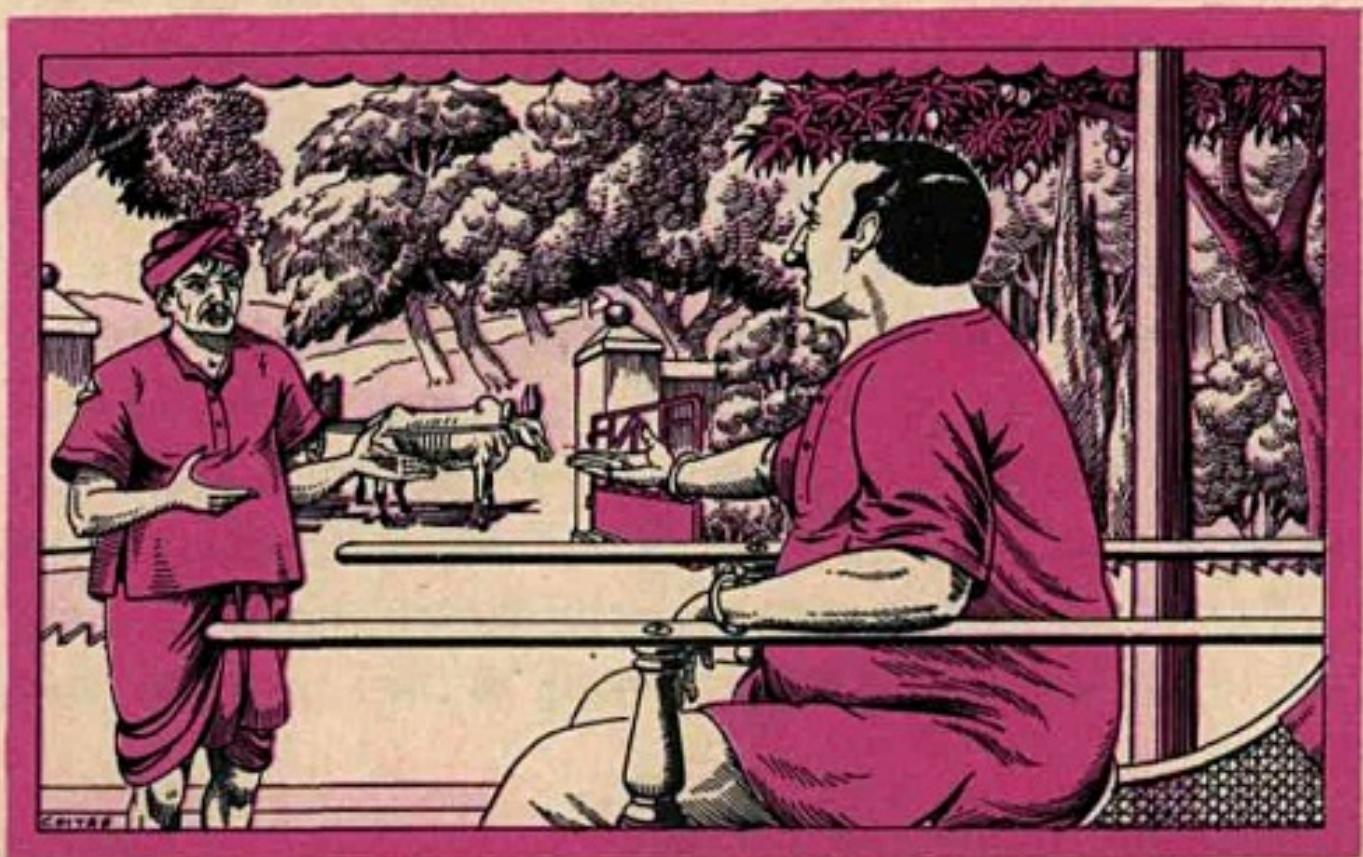
था, यदि माल नहीं पहुँचाया गया, तो शरभाद्रि माल तो खरीदेगा नहीं, किराया भी न देगा।"

यह सब सुनकर पन्नालाल को एतन्ना पर दया आ गई। "अरे कोई बात मान ली इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम बैल को यूँ मारो? तुम बैल को सौ रुपये में बेचना ही तो चाहते हो। वे सौ रुपये मैं दिये देता हूँ। मुझे बैल दे दो।" पन्नालाल ने एतन्ना से कहा।

एतन्ना ने आँखें फाड़ फाड़कर, बिना कुछ कहे, पन्नालाल के दिये हुए सौ रुपये ले लिए। पन्नालाल ने बैल को खोला और चरने के लिए छोड़ दिया।

"इस माल को अब शरभाद्रि के घर तक कैसे पहुँचाओगे? मैं जाकर दो बैलों की गाड़ी भेज दूँगा, उसमें यह माल शरभाद्रि के यहाँ पहुँचा देना और उससे कह देना कि रास्ते में ही बैल बिक गया था। क्यों?" पन्नालाल ने कहा।

"वह सब मैं देख लूँगा। मैं आपका भला कभी न भूलूँगा। वह देखिये खाली गाड़ी इस तरफ़ ही आ रही है। उस पर मैं सारा माल पहुँचा दूँगा।" एतन्ना ने कहा।

पन्नालाल के चले जाने के बाद, एतन्ना ने खाली गाड़ी रोकी और अपनी गाड़ी का माल उस पर लादकर वह अपनी गाड़ी स्वयं खींचता, शरभाद्रि के घर पहुँचा।

"माल तो ले आये, पर तुम्हारा बैल कहाँ है?" शरभाद्रि ने पूछा।

"मैं आपका माल लेकर, आधा फासला आया ही था कि एक आदमी ने पूछा—"किसका है बैल? इतना सारा माल, इतनी आसनी से खींचकर ले जा रहा है। मैं मान गया था कि मैं सौ रुपये में आपको बैल बेच दूँगा। उन्होंने ऊपर

से पाँच रुपये दिये और तभी बैल को खरीद ले गये। आपके माल को पहुँचाने के लिए उन्होंने ही गाड़ी का इन्तज़ाम किया। वे चले गये हैं।" एतन्ना ने कहा।

शरभाद्रि ने अचरच किया और पूछा कि किसने बैल खरीदा था। उसने कहा कि वह उसका नाम नहीं जानता था। कोई भी हो, पर वह बैलों की नस्ल बड़ी अच्छी तरह जानता है, कहकर एतन्ना शरभाद्रि के पास से चला गया। शरभाद्रि को इसका अफसोस रहा कि वह बैल की कीमत न समझ पाया था।

इसके तीन महीने बाद, सक्रान्ति का त्योहार आया। बैलों का मुकाबला हुआ। चूँकि उस बैल को इन तीन महीनों में, पन्नालाल ने खूब खिला पिला दिया था इसलिए वह खूब तकड़ा हो गया था। मुकाबले में उसने आस पास के बैलों को हरा दिया, जो मुकाबला देखने आये थे, उनमें शरभाद्रि और एतन्ना भी थे।

एतन्ना ने शरभाद्रि को, पन्नालाल और बैल को दिखाकर कहा—"अब आपने देख लिया न खुद बैल की करामात! इन्होंने ही उसे खरीदा था!"

शरभाद्रि ने पन्नालाल के पास आकर कहा—"मैं इस बैल को खरीदना चाहता था, पर आपने खरीद लिया। यह मेरी ही गलती थी कि मैं बैलवाले से कह न सका कि मैं ही बैल खरीदूँगा। अब भी अगर आप बेचना चाहें, तो मैं खरीदने के लिए तैयार हूँ।"

"चाहिये तो ले जाइये। मुझे कोई एतराज़ नहीं है।" पन्नालाल ने कहा।

शरभाद्रि ने उस बैल के लिए एक सौ पचास रुपये दिये और उसको खुशी खुशी हाँक ले गया।

# समुद्र रानी के गुलाम

पश्चिमी समुद्र के तट पर एक राजा था। उसे समुद्र में सफर करने का बड़ा शौक था। उसके पास एक बड़ा जहाज़ था। उसके रेशम के पाल थे। उसने बन्दरगाह के सामने अपना महल बनवाया। बन्दरगाह में हमेशा उसका जहाज़ रहता और जब कभी वह चाहता, वह समुद्री यात्रा पर निकल जाता।

एक बार वह जहाज़, समुद्र के बीच बिना किसी कारण के रुक गया। हवा अनुकूल थी, पर जहाज़ नहीं हिल रहा था। राजा ने सोचा कि क्या किया जाये।

राजा ने झुककर समुद्र की ओर देखा। "जिस किसी ने भी जहाज़ को रोका हो, अगर उसने मेहरबानी करके, मेरे जहाज़ को तुरत छोड़ दिया और मुझे अपने देश जाने दिया, जो कुछ मेरे हाथ में है, मैं उसके लिए अवश्य करूँगा।"

उसकी बात का उत्तर समुद्र की तह से आया। "जो बचन दिया है, उससे न मुकरना। तुम ज्योंहि तट पर पहुँचो, जो प्राणी तुम्हें दीखे, उसे मुझे अर्पित कर देना, यदि तुमने यह मान लिया तभी मैं तुम्हें समुद्र में से जाने दूँगा।"

"अच्छा, वैसा ही करूँगा।" राजा ने कहा। तुरत जहाज़ आगे बढ़ा। राजा ने सोचा कि समुद्र की तह से समुद्र की रानी ने ही वह कहा होगा। उसके बारे में उसने पहिले ही बहुत-सी बातें सुन रखी थीं।

दो रोज बाद जहाज़ तट पर पहुँचा। तट अभी दूर था कि बन्दरगाह में, उसे तिनके-सी कोई चीज़ हिलती दिखाई दी। जब वह पास गया, तो वह पहिचान गया कि वह उसका छोटा लड़का था। तुरत उसे समुद्र रानी की बात याद हो आयी और उसने अपना सिर एक तरफ फेर लिया। उसे तभी पानी में एक बत्तख तैरती दिखाई दी। राजा ने जो दूसरी ओर देखा, तो उसे एक सूअर भी दिखाई दिया।

उसने सोचा कि यदि बत्तख और सूअर को मारकर समुद्र को दे दिया गया, तो उसका वचन पूरा हो जायेगा। राजा उनको मरवाकर, समुद्र में डालकर, जहाज़ से उतरकर किनारे के अपने महल की ओर गया।

उसी समय समुद्र की एक बड़ी लहर महल तक आयी, उस लहर के साथ, मारी गई बत्तख और सूअर भी किनारे आ लगे। लहर वापिस जाती जाती, उसके छोटे लड़के को उठा ले जाती, अगर झट राजा ने अपने लड़के को ऊपर उठा न लिया होता।

राजा जान गया कि समुद्र रानी तब तक खुश न होगी, जब तक वह अपने लड़के को न देगा। इस खतरे के बारे में राजा ने अपनी पत्नी और लड़के से कहा। राजा ने सोचा अच्छा होगा यदि उसे समुद्र की ओर ही न जाने दिया। उसके बाद, राजकुमार अपने महल की चार दिवारी से बाहर ही न गया।

वर्ष बीतते रहे। राजकुमार अट्ठारह वर्ष का हो गया। एक दिन उसको, उसके मित्रों ने समुद्र तट पर टहलने के लिए आने को कहा। वह इसलिए मान गया, क्योंकि उसका ख्याल था

समुद्र की रानी तब तक अपनी माँग भूल गई होगी।

सब ने मिलकर तट के रेत पर पैर रखे थे कि नहीं कि एक बड़ी लहर आयी। एक हाथ, जिस पर बहुत-से आभूषण थे, ऊपर उठा और राजकुमार को फौरन पानी के अन्दर खींच ले गया।

पानी में डूबने पर भी राजकुमार घबराया नहीं। उसे कोई मैदानों में से, एक मनोहर उद्यान में ले गया। उस उद्यान के बीच में एक राजमहल था। उसने सोचा कि वह महल समुद्र की रानी का था। उस महल में जाकर, उसने एक कमरे में पैर रखा। उस कमरे में तरह तरह के गहने पहिन, एक भौंडी मुँहवाली स्त्री खड़ी थी। उसने उसे देखकर कहा—"मैं तुम्हारे लिए बहुत दिनों से इन्तज़ार कर रही हूँ। कल तुम्हें काम पर लगाऊँगा। आज मज़े में लड़कों और लड़कियों के साथ खेलो।"

यह कहकर, वह उसको एक और बड़े कमरे में ले गई। वहाँ बहुत-सी बाल-बालिकायें, आपस में बातें कर रहे थे। वे सब राजकुमार और राजकुमारियाँ थीं।
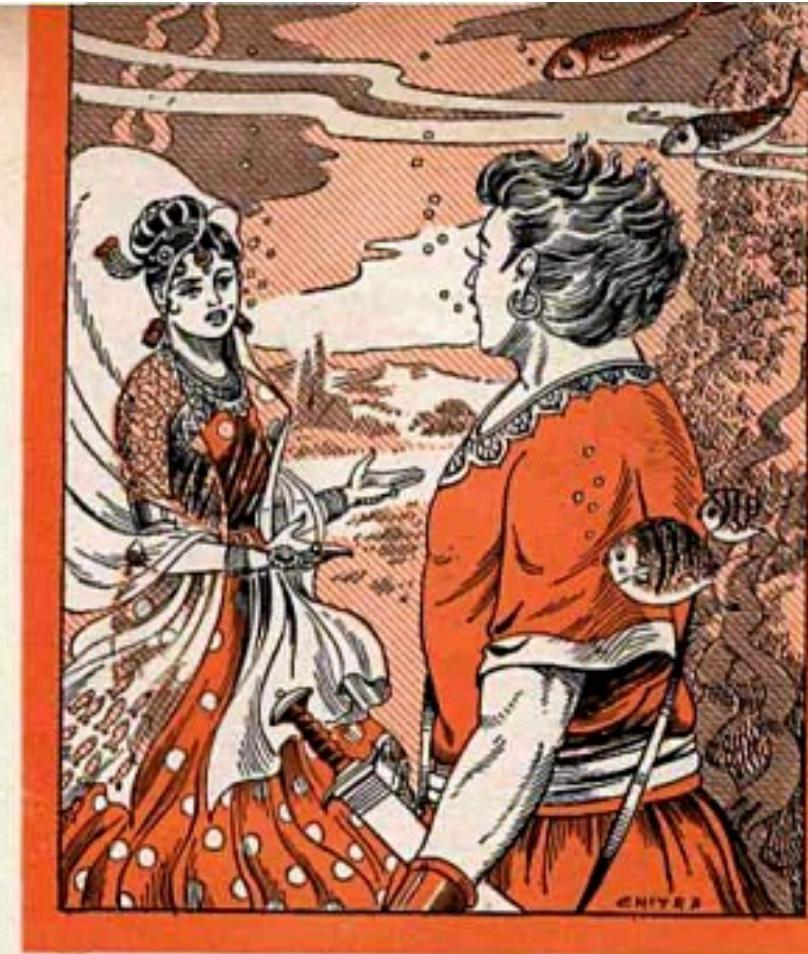
एक राजकुमारी से तो उसकी अच्छी जान पहिचान हो गई। वह देखने में बड़ी खूबसूरत थी।

"यह रानी बड़ी खराब है। मैं इसके पास सात साल से गुलाम हूँ। मैं उसकी सब चाल-चालाकियाँ जानती हूँ। फिर भी उससे बचकर निकल पाना बहुत कठिन है। यदि हम दोनों मिल-जुलकर रहे, तो भाग निकलने का शायद रास्ता मिल जाये।" राजकुमारी ने कहा।

उसके साथ मैत्रीपूर्वक रहने में उसे कोई आपत्ति न थी। उसने राजकुमारी से

कहा कि जो कुछ वह करने को कहेगी वह करने के लिए तैय्यार था।

अगले दिन सवेरे समुद्र रानी ने राजकुमार को बुलवाया—"लगता है तुमने सबसे अधिक सुन्दर दासी से दोस्ती कर ली है। जो मैं तीन काम दूँ, यदि तुमने उन्हें न किया तो तुम्हें उसे देखने की भी इज़ाजत न दूँगी। यदि ये काम कर दिखाये और तुमने उससे शादी भी करनी चाही तो भी मैं कोई एतराज़ न करूँगी। यदि काम न हुए तो तुम्हें ज़िन्दगी भर मेरे यहाँ गुलाम रहना होगा।" रानी ने कहा।

वह उसे मैदान में ले गई और उसे बताया कि उसे पहिले क्या करना था। शाम तक वहाँ की सारी घास काटकर उसे फिर वैसे ही चिपकाओ, यह कहकर रानी चली गई।

राजकुमार हँसिया लेकर, मैदान में घास खोदने लगा। परन्तु वह जल्दी ही जान गया कि शाम तक वह घास नहीं खोद पायेगा, फिर उसका चिपकाना तो दूर रहा। वह अपने भाग्य को कोसता, हाथ पर हाथ रखकर बैठ गया।

थोड़ी देर में राजकुमारी उस तरफ़ आई और उससे पूछा कि वह क्यों चिन्तित था। राजकुमार ने जो कुछ हुआ था, उसे बता दिया। राजकुमारी ने उसके हाथ से हँसिया लिया। उसे एक तरफ़ मोड़कर घास में रगड़ा। घास कटकर गिरने लगी। जब उसने उसे दूसरी तरफ़ मोड़कर घास पर रगड़ा, तो घास फिर चिपकने लगी। परन्तु कटे घास में और न कटे घास में थोड़ा-सा फर्क था। कटे घास को जहाँ जोड़ा गया था, वहाँ वह जोड़ दिखाई दे रहा था।

यह रहस्य मालूम हो जाने के बाद, राजकुमार ने बड़ी तेज़ी से घास काटकर फिर उसे चिपका दिया।

शाम होने में अभी काफ़ी समय था। दोनों काफ़ी देर तक गप्पें मारते रहे। जब रानी के आने का समय आया, तो राजकुमारी उठकर चली गई। रानी आयी। उसने घास देखी, फिर कहा—"यह सारा काम तुमने तो नहीं किया, मालूम होता है?"

अगले दिन रानी ने राजकुमार को दूसरा काम दिया। अस्तबल में सौ घोड़े थे। उन्हें कभी किसी ने साफ़ न किया था। शाम तक राजकुमार को उन सब को साफ़ करके, फिर से फर्श लगाना था।

वह एक झाड़ू लेकर अस्तबल गया। वहाँ उसने जो कूड़ा कर्कट देखा, तो उसका दिल बैठ गया। फिर राजकुमारी उसके पास आई। उसने पूछा कि वह क्यों चिन्तित था। उसने दीवार से लटकती सोने की सलाई निकाली और उसे एक बूढ़े घोड़े के सामने घुमाई। "सारे अस्तबल को साफ़ करो।" तुरत वह घोड़ा अपने खुर से आकाश में धूल उड़ाने लगा। राजकुमार और राजकुमारी वहाँ से दूर चले गये।
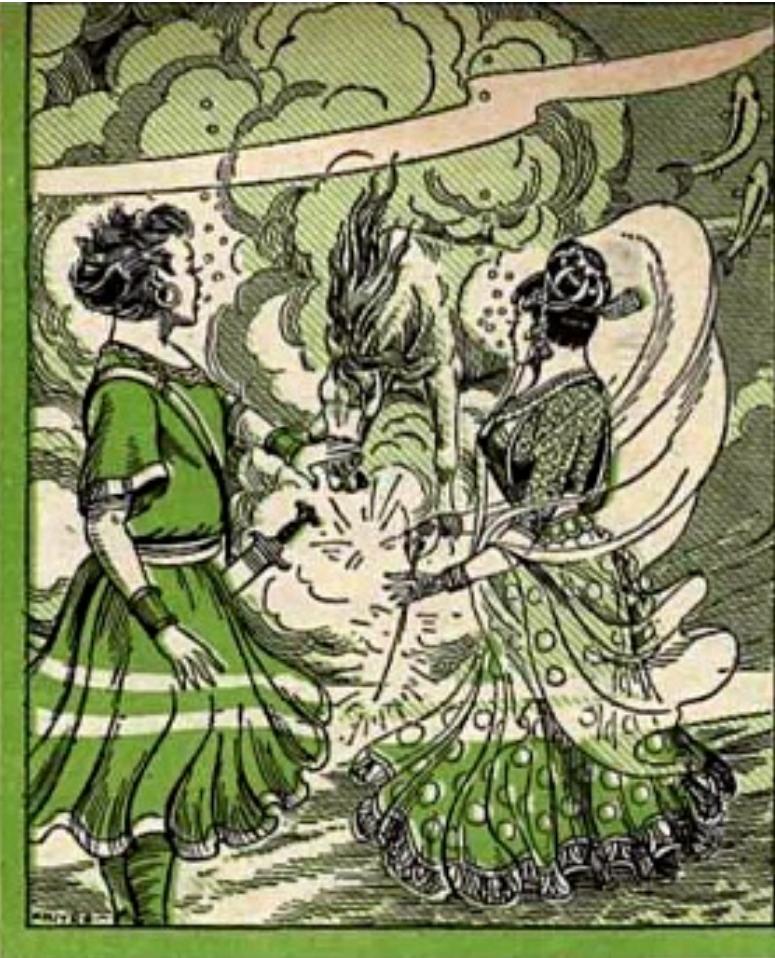
जब वे कुछ देर बाद, अस्तबल में आये, तो अस्तबल में कहीं एक तिनका भी न था। राजकुमारी ने जब एक कपड़े से फर्श छुआ और फर्श नये फर्श की तरह चमचमा रहा था।

शाम होते ही रानी ने आकर अस्तबल देखा—"यह काम तुमने स्वयं नहीं किया मालूम होता है।"

तीसरे दिन सवेरे रानी ने राजकुमार को तीसरा काम दिया। एक सूअरखाना था,

जिसमें हज़ार सूअर थे। उसे कभी किसी ने साफ न किया था। राजकुमार को उसे शाम तक साफ करके, नया बनाना था।

वह यह जानकर कि बिना राजकुमारी की मदद के वह काम उससे न होनेवाला था वह उसकी इन्तज़ार करने लगा। उसके आते ही उसने उसको अपने काम के बारे में बताया। वह सूअरखाने में गई। कोने में से एक छड़ी ली और वहाँ एक सूअर को उससे मारा। "सूअर, यदि तुमने मेरी मदद की तो मैं तुम्हें भागने दूँगी।" सूअर अपनी जगह से उठ ही रहा था कि वे दोनों दूर भाग गये। पहिले ही वहाँ बड़ी बदबू थी न मालूम जब वहाँ सफाई शुरु होगी तो कितनी बदबू आयेगी।

जब वे थोड़ी देर में आये, तो सूअरखाना रानी की भोजनशाला के समान साफ़ था। बिल्कुल बदबू न थी। काम पूरा करके सूअर भागा जा रहा था कि उनको मिला। शाम तक वे दोनों गप्पें मारते रहे। फिर राजकुमारी चली गई। थोड़ी देर बाद रानी आई। उसने सूअरखाना देखा। "यह काम भी तुमने नहीं किया है। फिर भी मैं अपने वचन के अनुसार तुम्हें राजकुमारी से शादी करने दूँगी। विवाह की सारी सामग्री मेरी बहिन वनरानी के पास है। तुम कल जाकर उसे ले आओ।"

राजकुमार सन्तुष्ट हुआ। उसे लगा कि समुद्र की रानी उतनी बुरी न थी, जितनी कि उसकी साथिन ने बताया था। समुद्र रानी उसको वन रानी के पास कैसे जाया जाये, यह बताकर चली गई।

(अगले अंक में समाप्त)

# लापता चावल

एक गाँव में हयग्रीव नाम का व्यक्ति रहा करता था। वह तो गरीब था ही फिर बीमार भी हो गया, दुनियाँ में गुज़ारा करना असम्भव हो गया।

वह बीबी, बच्चों की तकलीफें न देख सका और घर छोड़कर चला गया। यदि कुछ कमा वमा लिया, तो घर वापिस आयेंगे, नहीं तो, घूमते फिरेंगे....यह उसका ख्याल था।

सूखकर काँटे हुए आदमी को कौन काम देगा? हयग्रीव को कहीं कोई काम न मिला। वह ज़िन्दगी से बिल्कुल ऊब गया, निराश हो वह एक जंगल में बहती नदी में जा कूदा।

पास ही एक मुनि तपस्या कर रहा था। उसने उसे नदी में कूदते देखा। वह भागा भागा आया। हयग्रीव को नदी में से निकाला। उसने उसकी दुःखभरी कहानी सुनी।

"मैं तुम्हें एक मन्त्र बताता हूँ। उसकी सहायता से, तुम्हें तीन रोज तक जो तुम खाना चाहोगे, वह मिल जायेगा। उसके बाद तुम्हारे लिए यह मन्त्र काम का नहीं रहेगा। इसके बाद, मन्त्र को किसी और को सौंप देना और अगर कोई भी न मिले, तो उसे यूँहि छोड़ देना। जब तक तुम्हारे पास मन्त्र शक्ति है—उससे तुम अच्छे-अच्छे पौष्टिक पदार्थ खाकर, कुछ बल पा लेना और उस बल से कोई काम कर लेना।" मुनि ने कहा।

हयग्रीव खुशी खुशी घर वापिस आया। मुनि ने जो मन्त्र बताया था, उसे जप कर

बेहोश गिर गया। हयग्रीव अनुभव से जानता था कि बेहोशी क्या होती है, वह उसको घर के अन्दर ले गया। होश में लाया, खिलाया पिलाया।

फिर हयग्रीव ने उसको उस मन्त्र के बारे में बताया, जिसे वह जानता था। उससे कहा कि उसकी मदद से तीन दिन आराम से खाये पिये, तकड़ा बने और फिर किसी और को वह मन्त्र बता दे।

भिखारी ने हयग्रीव से मन्त्र सीख लिया। उसे जपकर, उसने चाहा कि एक बोरा चावल मिल जाये। तुरत उसकी झोंपड़ी में बोरा-भर चावल गिरे। भिखारी की पत्नी खुशी से नाचने लगी। भिखारी ने बोरे का चावल बाज़ार में बेचा और उससे जो पैसा मिला, उससे घर के लिए आवश्यक चीज़ें खरीद लाया।

अपने लिए और अपने सारे घर के लिए, जो चावल, दाल, शाक-सब्जी, दूध, घी आदि चाही। वे मिल गईं।

तीन दिन तक हयग्रीव के कुटुम्ब ने पेट-भरकर खूब खाना खाया।

तीसरे दिन हयग्रीव ने फिर एक बार मन्त्र जपकर, तीन और दिन के लिए खाने की चीज़ें जमा करके रख लीं।

क्योंकि अगले दिन वह मन्त्र किसी काम का न था, वह किसे उसे दिया जाय, यह सोच ही रहा था कि एक भिखारी भूखा उसके घर के सामने आया और वहीं

वह मन्त्र अभी दो दिन उसके और काम आता। उसने अपनी पत्नी से सलाह मशवरा किया कि दो दिन उसे किस तरह अधिक से अधिक उपयोगी बनाया जाय। तीन दिन उस मन्त्र को प्रयोग में लाने के बाद, उसने उसे अपनी पत्नी को सिखाने की ठानी। इस तरह उसके पास

पाँच दिन तक वह मन्त्र और रहेगा। इस बीच, उसको अपनी सब इच्छायें पूरी करनी थीं।

ये पति पत्नी बड़े लालची थे। वे गाँव वालों से नाराज भी थे चूँकि वे रोज भीख नहीं देते थे। कभी कभी तो खिझकर भगा भी देते थे। इस मन्त्र की सहायता से उन्होंने अपनी इच्छायें तो पूरी करनी ही चाहीं, गाँववालों से बदला भी लेना चाहा। यह करने के लिए उनकी झोंपड़ी ठीक न थी—किसी निर्जन प्रदेश में जाना था। जंगल में एक पुराना उजड़ा बड़ा मकान था। उसे भिखारी जानता था। वह अपनी पत्नी के साथ उस मकान में गया। मन्त्र पढ़कर उसने कहा—"हमारे गाँव के सब घरों से चावल उठाकर यहाँ ले आओ।"

उसकी पत्नी उससे बढ़कर थी, पति से मन्त्र पाते ही, उस लालची ने चाहा कि सारे देश का, राजमहल का भी चावल उस उजड़े मकान में रख दिया जाये। इसके बाद मन्त्र शक्ति चली गई।

वे पति पत्नी खुश थे कि उन्होंने कोई बड़ा काम किया है, और सारा
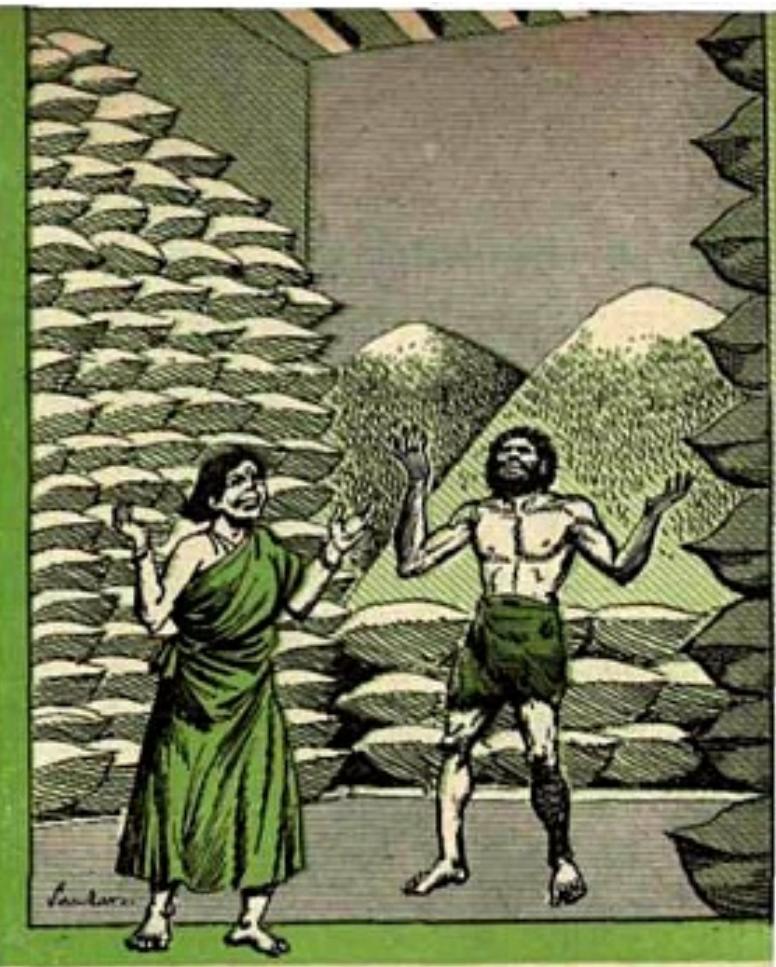
देश दाने दाने के लिए तरस रहा था धनियों और गरीबों की एक-सी हालत थी। यह नौबत आई कि लोग कन्दमूल घास फूल सब खाने लगे। सब चकित थे कि देश का सारा चावल कैसे यकायक गायब हो गया था। यह मालूम करने के लिए राजा ने चारों ओर गुप्तचर भेजे।

इतने में एक आश्चर्य की बात घटी। हर घर में से चूहे निकलने लगे। जब चावल खतम हो गये, तो घर में जो कुछ खाने को था, लोगों ने खा लिया। चूहों

के खाने के लिए कुछ न रहा तो लाखों की तादाद में वे बाहर आये और एक दिशा की ओर जाने लगे, जैसे उनको मालूम हो गया हो कि कहाँ खाना रखा है।

यह पता लगते ही राजा ने सिपाहियों को चूहों के पीछे पीछे भेजा। चूहों के जत्थे, जंगल के बीचवाले बड़े मकान में पहुँचे। कुछ सिपाहियों ने उस मकान को घेर लिया। कुछ अन्दर गये। जो अन्दर गये थे, उनको आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया। घर में जहाँ देखो वहाँ चावल के बोरे थे। ढ़ेर के ढ़ेर बिखरे पड़े थे।

सिपाहियों को देखकर, भिखारी और उसकी पत्नी ने भागना चाहा, पर सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया। "तुम यहाँ क्यों हो? तुम्हारे पास ये चावल के बोरे कहाँ से आये?" जब सिपाहियों ने पूछा, तो वे कुछ न कह पाये। इसलिए वे उनको राजा के पास ले गये और उससे कहा कि हज़ारों बोरे चावल उनके पास थे।

भिखारी ने राजा को बता दिया कि कैसे उसने हयग्रीव से मन्त्र पाया था और कैसे उसकी शक्ति से, जंगल में उजड़े मकान में उसने चावल के बोरे ज़मा किये थे। राजा ने जब हयग्रीव को बुलाकर पूछताछ की, तो मालूम हो गया कि मन्त्र की बात सच थी। इसके बाद राजा ने जंगल से चावल के बोरे मँगवाये। जिस जिसने जितना जितना चावल खोया था, उतना उतना उसको दिलवा दिया। भिखारी और उसकी पत्नी को कैद में डाल दिया।
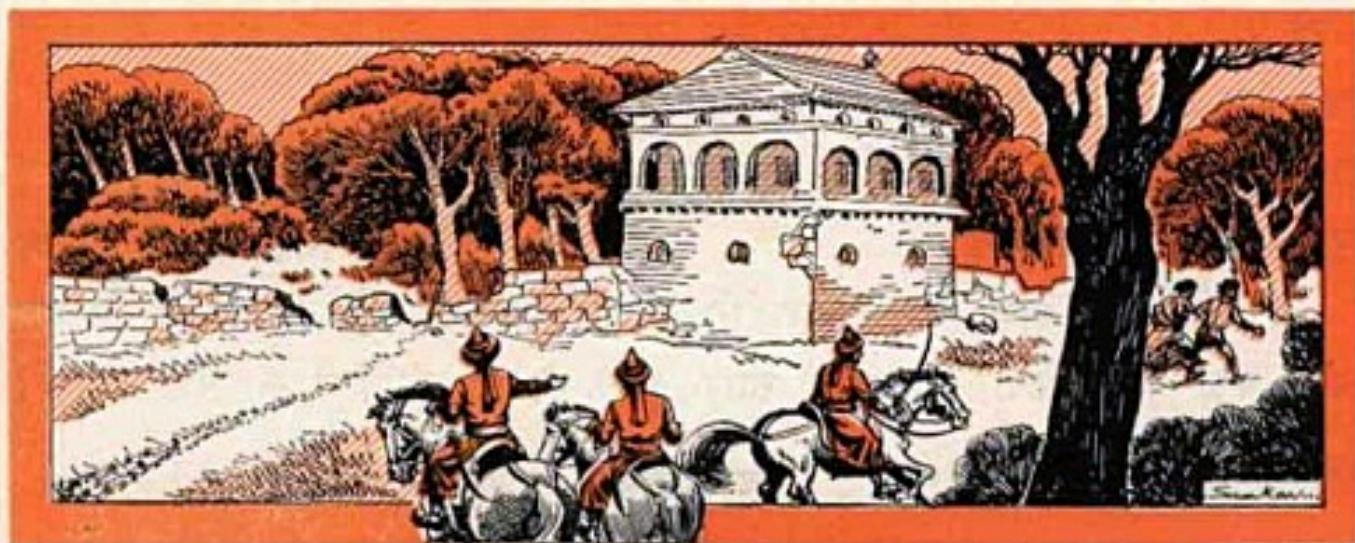
एक गाँव में एक बड़ा धनी था। उसकी तीन लड़कियाँ थीं। लड़के नहीं थे। सब कहा करते थे कि उसने बहुत-सा पैसा जमा कर रखा था।

वह रोज गाड़ी में, खेतों के बीच दो तीन घंटे घूमता, फिर घर चला जाता। एक दिन उसने अपने गाड़ीवान को बुलाकर कहा—"गाड़ी तैयार करो।" गाड़ीवाला गाड़ी में घोड़ा जोतकर ले आया। धनी उसमें सवार होकर निकल पड़ा।

एक घंटे बाद अन्धेरा होता देख शिव ने कहा—"बाबू, गाड़ी क्या वापिस ले जाऊँ?" गाड़ी में से कोई जवाब न आया। शिव ने गाड़ी रोककर अन्दर जो देखा, तो उसने मालिक को मरा पाया।

जब घर में इस आकस्मिक मृत्यु की खबर पहुँची तो घरवाले रोये धोये। उसकी ज़मीन-जायदाद के बारे में वे कुछ भी न जानते थे। उससे भी बड़ी यह बात थी कि उसकी तिजोरी में कुछ ही रुपया था, जितना धन लोग सोचते थे उसमें उसका हज़ारवाँ हिस्सा भी न था।

यह स्थिति देख धनी की पत्नी बड़ी निराश हुई। उसे क्या करें, क्या न करें, कुछ न सूझा। तीन लड़कियों की शादी करनी थी। सिवाय गाड़ीवान शिव के और कोई आदमी घर में न था, इसलिए उसने उसे नौकरी से नहीं निकाला। यही नहीं, हर छोटे मोटे काम के लिए वह उस पर ही निर्भर रहती। अपने मालिक की अन्त्येष्टि के लिए उसने बड़ी मदद की।

आनन्दकुमार

सवेरे तक कोई सोया भी नहीं, सब हथेली में प्राण लिए बैठे रहे।

कष्ट तो थे ही, अब धनी की पत्नी यह भी सोचने लगी कि घर भी भूतों का अड्डा हो गया था। सवेरे होते ही उसने शिव को बुलाया। रात जो कुछ हुआ था, उसे बताकर कहा—"यदि रोज भूत बनकर वे आयें और चीज़ें इधर उधर फेंकते रहें, तो हमें कहीं जाना होगा....हम यहाँ नहीं रह पायेंगे। जब तक यह गड़बड़ी खतम नहीं हो जाती तब तक तुम हमारे घर सोओ....ताकि हम औरतों का धीरज बना रहे।"
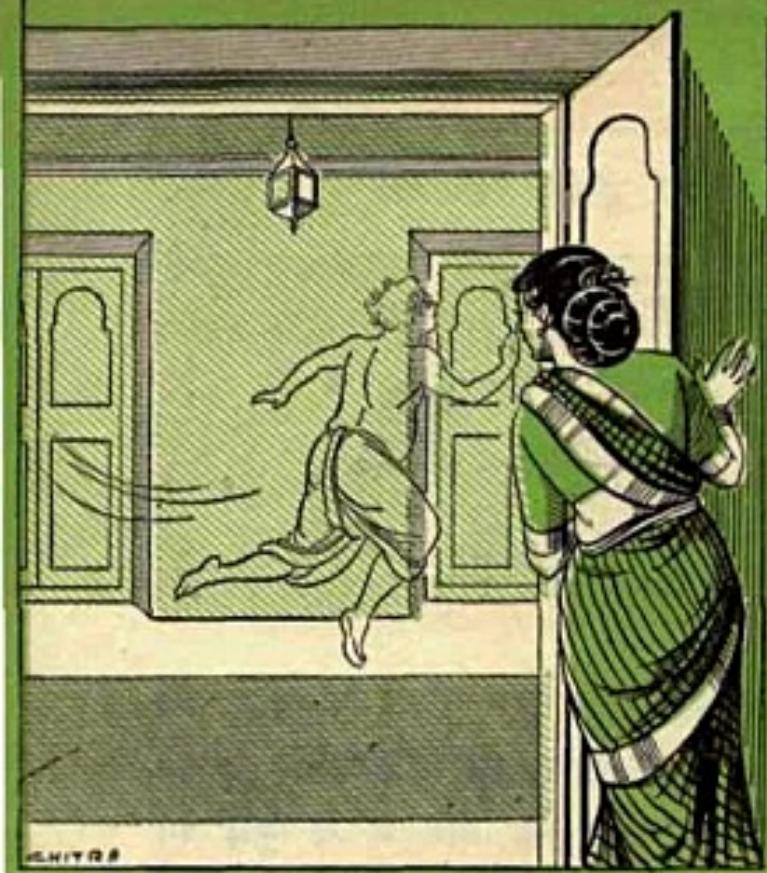
कुछ दिनों बाद घर में किसी के चलने की आहट सुनाई दी। धनी की पत्नी घबराकर उठी। उसे ऐसी आवाज़ सुनाई दी, मानों कोई रसोई घर में कुछ उलट पलट रहा हो। फिर उसने अपने पति को रसोई घर से सोने के कमरे में आता देखा। उसने पलंगों पर से गद्दे खींचे। पेटी सन्दूकों को ठोका। उसके बाद एक और कमरे में चला गया। इस तरह वह घर के सब कमरों में गया। सामान इधर उधर फेंक दिया, तोड़ ताड़दिया। सवेरे तक अच्छी खासी गड़बड़ी तैयार कर दी।

"मालिक भूत हो गये हैं? कहते हैं, जिनकी इच्छायें पूरी नहीं होतीं, वे भूत हो जाते हैं। आप डरिये मत। आज रात मैं आपके साथ होऊँगा।" शिव ने कहा।

उस दिन वह रात को घर के शयनकक्ष में एक पलंग के नीचे छुप गया। थोड़ी देर बाद भूत आया, पहिले तो वह रसोई घर में आया, फिर सारे घर में सवेरे तक ऊधम मचाता रहा।

जब सवेरे भूत का उत्पात रुका, तो धनी की पत्नी ने शिव से पूछा—"क्यों,

भाई देखा था न? यदि रोज यह ऐसा करें, तो हम कब तक ज़िन्दा रहेंगे? अगर किसी को साथ रहने के लिए बुलाया भी जाये तो भूतों के घर में कौन रहने आयेगा? यदि भूत की बात फैल गई, तो दिन में भी कोई इस तरफ़ न फटकेगा?"

"डरिये मत। अगर मालिक यूँ कर रहे हैं तो इसका कुछ कारण होगा? क्या कारण है, जानने की कोशिश करूँगा। पर आप आज रात हमारे घर जाकर सोइये मुझे अकेले ही यहाँ सोने दीजिये।" शिव ने कहा।

उस दिन रात को उसने अपनी मालकिन और उनकी लड़कियों को अपने यहाँ सोने भेज दिया, अन्धेरा होते ही, वह मालिक के मकान के सोने के कमरे में चला गया। रात कुछ गुज़र जाने के बाद भूत आया। और इधर उधर पड़ी चीज़ों को उठाकर फैंकने लगा। शिव भी करछियाँ और ढ़क्कन, इधर उधर पड़ी चीज़ों को उठाकर फैंकने लगा।

भूत ने भी यह देखा। उसने उसकी ओर मुड़कर पूछा—"अरे तुम हो शिव, क्या कर रहे हो?"

शिव ने रुककर पूछा—"मालिक, तो आप क्यों यह कर रहे हैं?"

"क्या बताऊँ? शिव समान के कमरे में मैंने तीन पत्थरों के नीचे तीन खज़ाने गाड़ रखे हैं। एक घड़े में सोना है, एक में चान्दी और तीसरे में गहने वगैरह। उसके बारे में सिवाय मेरे कोई नहीं जानता, इसलिए घबरा गया हूँ। क्योंकि कुछ और सोच नहीं पाता हूँ, इसलिए यह कर रहा हूँ।" भूत ने कहा।

"यह कहिये, मैं अपनी कुल ज़िन्दगी में, ज़मा किये सौ मुहरों के लिए ही जब इतना फिक्र करता हूँ, तो आप इतने धन के लिए कितने फिक्र में होंगे?" शिव ने कहा।

"क्या तुमने भी धन गाड़ रखा है?" भूत ने पूछा।

"जहाँ हमारी गाड़ी रखी जाती है, वहीं एक कोने में, मैंने सौ मुहरें गाड़ दी थीं।" शिव ने कहा।

दोनों गड़बड़ी करके, जब समान के कमरे में आये, तो शिव ने पूछा—"तो क्या आपने यहीं खज़ाना गाड़ा था?"

"हाँ, इस कोने में, इस पत्थर के नीचे सोना रखा था और इस कोने के पत्थर के

"अब मैं भी तुम्हारे साथ हूँ, मालिक?" शिव ने कहा।

"क्या? तू भी मर गया? मैं तो नहीं जानता था।" भूत ने कहा।

"समय ही न था? मैं परसों ही तो मरा था।" शिव ने कहा।

"शाबाश....तो हम दोनों एक दूसरे के साथ हैं। चलो, सोने के कमरे में जायें! और वहाँ की चीज़ें इधर उधर फेंकें।" कहकर भूत दरवाज़े में से निकल गया। शिव ने दरवाज़ा खोला, अन्दर जाकर उसे बन्द कर दिया और भूत के साथ वह भी चीज़ें फेंकने लगा।

नीचे चान्दी और बीच के पत्थर के नीचे गहने हैं। मुझे डर है कि यह जिनको मिलने चाहिए, उनको न मिलकर किसी और को न मिल जायें।" भूत ने काँपते हुए कहा।

भूत ने जो पत्थर दिखाये थे, शिव ने उन पर निशान लगा दिया।

सवेरा होने को था कि भूत ने कहा— "शिव, अब हमें जाना होगा। यहाँ नहीं रहना चाहिए।"

"आप चलिये। मैं गाड़ी के पास जाकर, देखकर आता हूँ कि मेरी सौ मुहरें ठीक हैं कि नहीं, फिर मैं भागा भागा आपसे मिल जाऊँगा। मुझे डर है, कहीं उन्हें कोई खोदकर न ले गया हो।" शिव ने कहा।

भूत शिव के लिए नहीं रुका। वह अन्धेरे में चला गया।

सवेरा होते ही धनिक की पत्नी और उसकी लड़कियाँ घर में आयीं। शिव ने जो कुछ रात में गुज़रा था, उनको सुनाया। उनके सामने ही उन पत्थरों को खोदकर उठाया, जैसा कि भूत ने बताया था। उसके नीचे सोना, चान्दी और जेवरों से भरे घड़े थे।
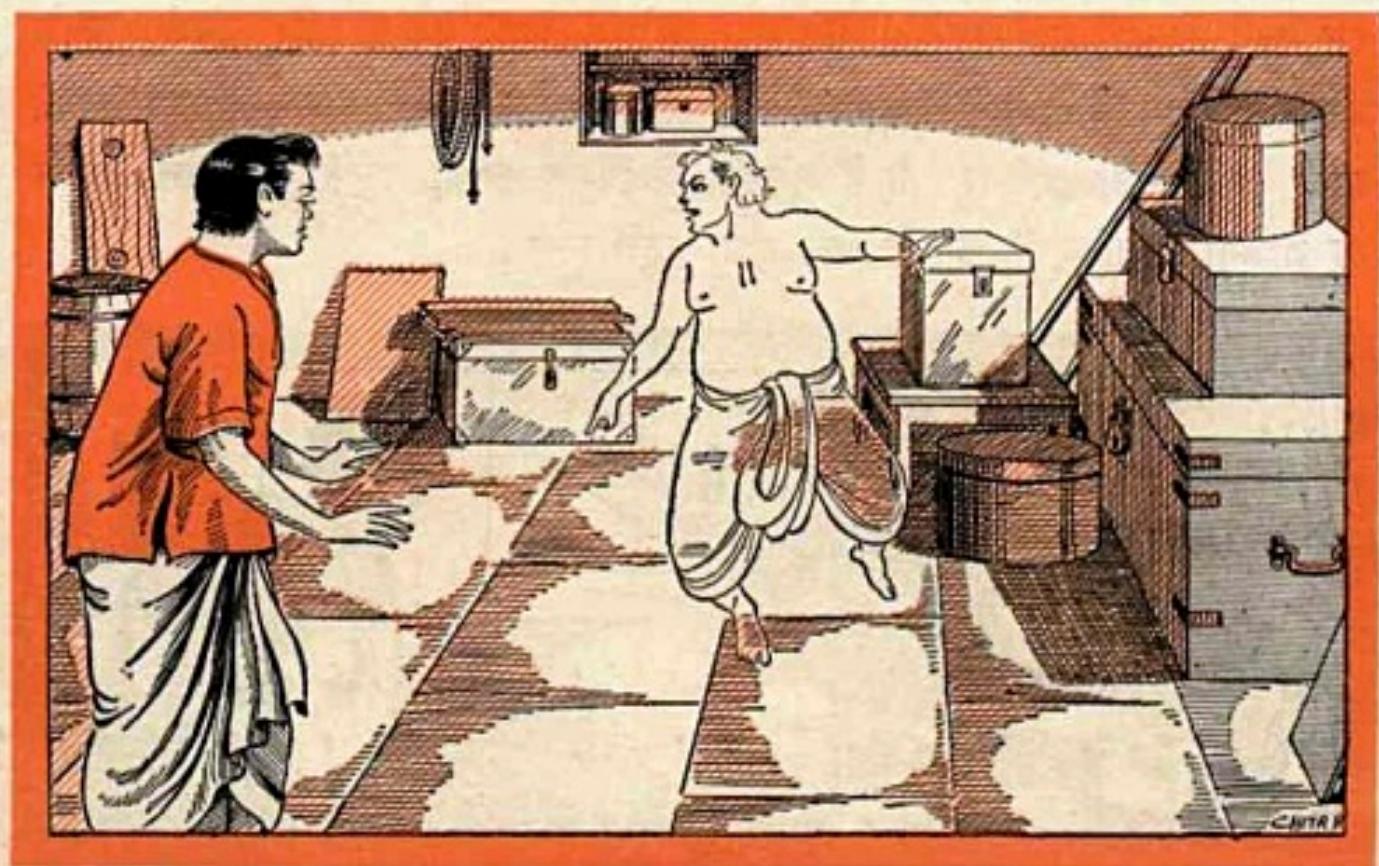
"अब मालिक का भूत आपको तंग न करेगा। अब मुझे जाने दीजिये।" शिव ने मालकिन से कहा।

मालकिन ने शिव से कहा—"अभी हमें छोड़कर कहाँ जा रहे हो? यदि दो तीन रातें आराम से न गुज़रीं, तो हमारे प्राण उड़ जायेंगे। दो दिन हमारे साथ रहो, बाद की बात बाद में सोचेंगे।"

शिव दो दिन उनके साथ घर में रहा। भूत कहीं उस घर के पास न फटका।

तीसरे दिन धनी की पत्नी ने कहा—"शिव, तुमने जो उपकार किया है, उसे हम कभी भी नहीं भूल सकते। मैंने एक बात सोची है। मेरी तीनों लड़कियाँ जब शादी करके चली जाऊँगी, तो मैं अकेली रह जाऊँगी, इसलिए मैं कम से कम एक लड़की को अपने पास रखना चाहती हूँ। मेरी तीसरी लड़की मुझे बड़ी प्यारी है। वह तुम्हारी उम्र के लिए ठीक है। मैं उसकी शादी तुमसे कर दूँगी, देखो, मना न करना। तुम दोनों साथ रहना। उससे तुम्हारा कोई नुक्सान न होगा और मेरा लाभ होगा।"

पहिले तो शिव यह सुन चकित रह गया। पर जब उसे मालूम हो गया कि मालिक की तीसरी लड़की उसे बहुत चाहती थी, वह शादी के लिए मान गया। चूँकि धन की कमी न थी, इसलिए धनी की पत्नी ने अपनी दोनों बड़ी लड़कियों की, बड़े घरों में शादी कर दी और उनको, उनके ससुराल भेज दिया। शिव तीसरी लड़की से विवाह करके, उसके साथ उसी घर में रहने लगा।
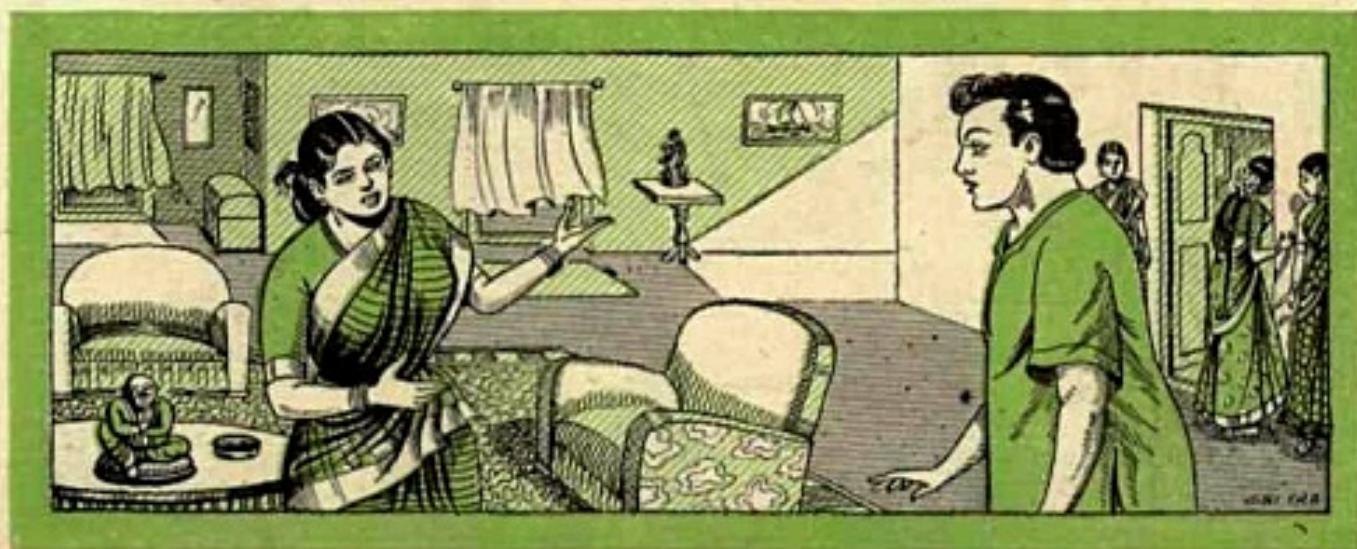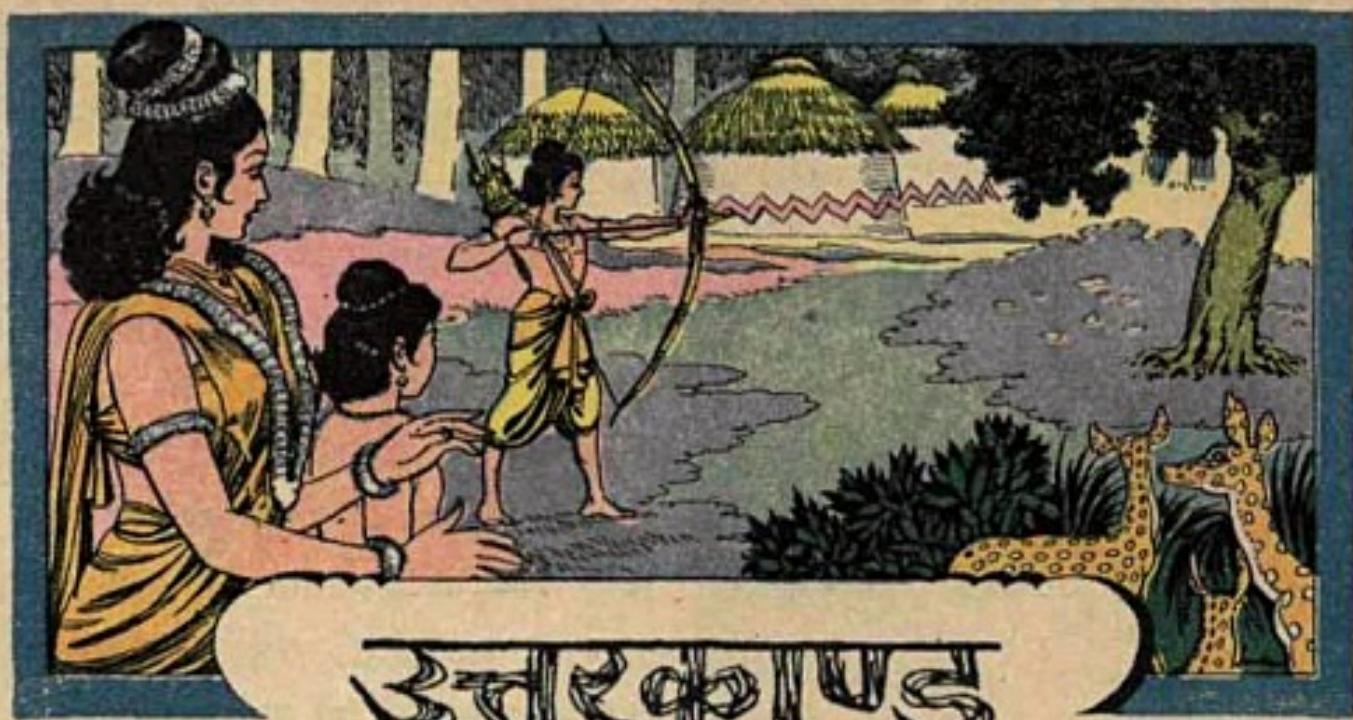
रावण वरुण लोक से लंका वापिस आते, रास्ते में जितनी सुन्दर कन्यायें दिखाई दीं, उनको पुष्पक विमान में चढ़ाकर ले आया। उनकी संख्या हज़ारों में थी। उन्होंने जोर से रोते हुए रावण को खूब गालियाँ दीं।

वह घर पहुँच रहा था कि उसकी बहिन शूर्पनखा जोर से रोती हुई उससे मिलने आयी। उसने कहा—"क्या बताऊँ? बाकी कालकेयों के साथ मेरे पति को मारकर तुमने मुझे विधवा कर दिया है.... तुम्हें बहिनोई का ख्याल भी न रहा।"

"जो हो गया है, उसके लिए रोना धोना क्या? मैं जब युद्ध में मस्त था, मुझे यह भी याद न रहा कि वह हमारा आदमी है। अब से तुम अपने खर के साथ रहो। वह तुम्हें कोई कमी न होने देगा। चौदह हज़ार राक्षसों का उसको नायक बनाकर दूषण को साथ देकर दण्डकारण्य की रक्षा के लिए भेज रहा हूँ। वे सब तुम्हारी आज्ञा का पालन करेंगे।" रावण ने कहा। इसके अनुसार शूर्पनखा खर दूषण के साथ दण्डकारण्य जाकर सुख से रहने लगी।

फिर रावण निकुम्भ वन गया। वहाँ यज्ञ करते हुए अपने लड़के मेघनाथ को
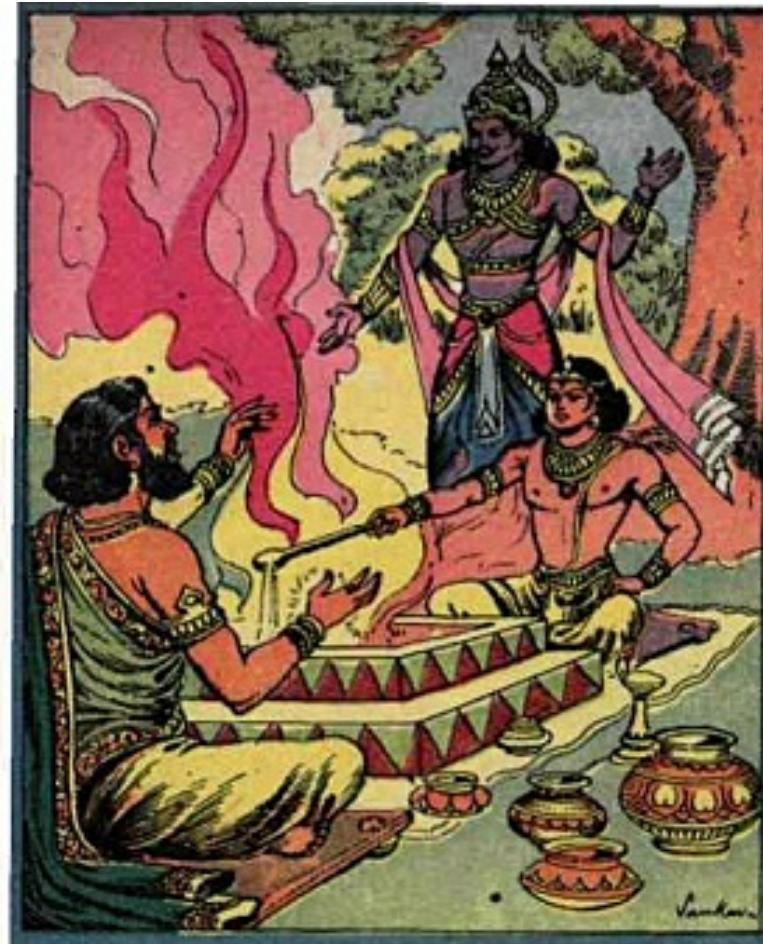
देखा, उसका आलिंगन किया। "यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने उससे पूछा।

इस प्रश्न का उत्तर शुक्राचार्य ने दिया। "तुम्हारे लड़के ने सात यज्ञ करने की ठानी है—अग्निष्टोम, अश्वमेध, राजसूय, गोमेध, वैष्णव ही नहीं। अत्यन्त कठिन महेश्वर यज्ञ करके शिव का साक्षात्कार करके, कामगमन रथ को और सर्वत्र अंधकार फैलानेवाली माया और धनुष बाण प्राप्त किये हैं। अब यह अन्तिम यज्ञ कर रहा है।"

शुक्राचार्य की बात पर रावण सन्तुष्ट न हुआ। उसने कहा—"आपने जो कुछ किया है, अच्छा नहीं किया है। हमारे शत्रु इन्द्र आदि को समर्पित करने के लिए हमारा धन द्रव्य नष्ट किया है। जो कुछ पुण्य प्राप्त किया है, वह काफ़ी है।" उसने मेघनाथ को साथ ले जाना चाहा।

तब विभीषण ने रावण को एक दुःख खबर सुनाई। कुम्भीनस, जो रावण की बहिन-सी थी और उसके यहाँ पल-बढ़ रही थी रावण की माँ के ताये माल्यवन्त की लड़की की लड़की थी। जब कोई न था, मधु नाम का राक्षस उसे उठाकर ले गया। उस समय रावण दिग्विजय पर निकला हुआ था, कुम्भकर्ण सो रहा था, विभीषण पानी में डूबकर तपस्या कर रहा था, मेघनाथ यज्ञ कर रहा था।

रावण यद्यपि स्वयं कई कन्याओं को उठा ले आया था, पर जब उसे मालूम हुआ कि उसकी बहिन को कोई उठा ले गया था, वह बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने कुम्भकर्ण को उठाया। राक्षस वीरों और सैनिकों को युद्ध के लिए सन्नद्ध किया। उनको लेकर वह मधु के निवास स्थल मधुपुर गया।

यह जानकर कि उसके पति को मारने के लिए उसका भाई बड़ी सेना के साथ आ रहा था, कुम्भीनस ने रोते हुए उसके सामने आकर कहा—"भैय्या, अपने बहिनोई को मारकर मुझे विधवा न करो।"

रावण ने कुम्भीनस पर तरस खाकर कहा—"अच्छा, तुम्हारे पति को नहीं मारूँगा। मुझे दिखाओ वह कहाँ है। मैं देवताओं को जीतने के लिए स्वर्ग जा रहा हूँ। उसको भी साथ ले जाऊँगा।"

कुम्भीनस ने अपने पति मधु के पास जाकर कहा—"मेरा भाई तुम्हें देवताओं से युद्ध करने के लिए बुला रहा है। जाओ, उस जैसे का स्नेह हमारे लिए बहुत आवश्यक है।"

मधु रावण के पास आया। उसका खूब आदर-सत्कार किया। रावण ने एक रात के लिए अपने बहिनोई का आतिथ्य स्वीकार किया। अगले दिन वैश्रवण के निवास स्थल कैलाश के पास पहुँचा। क्योंकि तब शाम हो गई थी, रावण की सेना ने वहीं पड़ाव डाला।

रात को चान्दनी खूब खिली। ठंडी ठंडी बयार चल रही थी। वृक्षों के बीच में
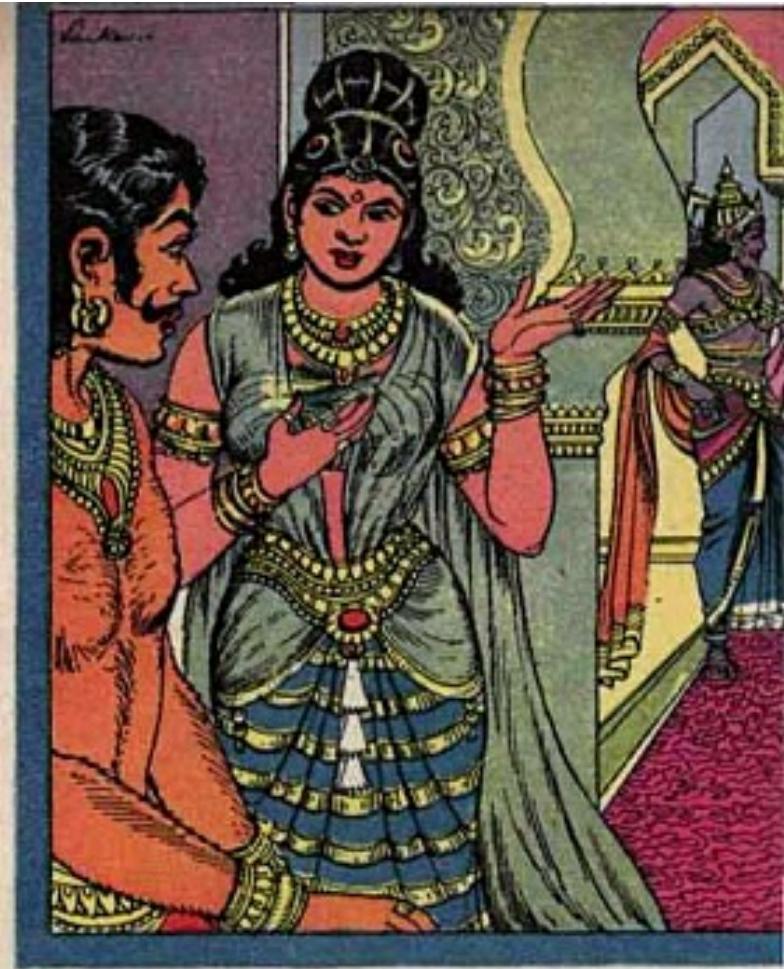
किन्नर वृन्द गान कर रहे थे। कुबेर के प्रासाद में अप्सराओं के गाये गीत सुनाई पड़ रहे थे। सर्वत्र फूलों की सुगन्ध थी। पहाड़ पर बैठे, चान्दनी में, जब उसने अपने चारों ओर का दृश्य देखा, तो उसको विरह वेदना सताने लगी।

उस समय अप्सराओं में अत्यन्त सुन्दर रम्भा, सोते हुए रावण की सेनाओं में से चलती उस तरफ़ आयी। उसको दिव्य आभरण, दिव्य पुष्प मालायें पहिने, वेणी में मन्दार फूल लगाये और काला परदा डाले, दूसरी लक्ष्मी की तरह आता

देख, रावण जहाँ बैठा था, वहाँ से उठकर उसके पास गया। उसका हाथ पकड़कर उसने कहा—"अब तुम किसके पास जा रही हो? कौन है वह भाग्यवान? मैं कोई कम नहीं हूँ। तीनों लोकों में मुझ से कोई बड़ा नहीं है। और वैसा व्यक्ति तुम्हें हाथ जोड़कर मना रहा है। हमारी इच्छा पूरी करो।"

रम्भा ने उसकी बात सुनकर, काँपते हुए कहा—"आपको मुझ से इस प्रकार बात नहीं करनी चाहिए। आप जैसों को तो, यदि मुझे कोई तंग करे तो, उससे रक्षा करनी चाहिए। मैं शायद होने को आपकी बहू जैसी हूँ। आपके बड़े भाई के लड़के नलकूबर मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं सिवाय उनके किसी और से प्रेम नहीं कर सकती।

"तुम अप्सराओं के लिए पति और ये सब सम्बन्ध कहाँ है?" कहकर रावण ने रम्भा के साथ बलात्कार किया।

रम्भा, कुचले हुए फूल की तरह, टूटी हुई लता की तरह, शर्मिन्दा हो गई। नलकूबर के पैरों पड़कर उसने रावण के कारनामे के बारे में उसे बताया।

नलकूबर ने क्रोध में जल का स्पर्श करके कहा—"यदि रावण ने कभी उस स्त्री के साथ बलत्कार किया, जिसे वह चाहता हो, तो उसके सिर के हज़ार टुकड़े हो जायेंगे।" यह शाप सुनकर वे पतिव्रता स्त्रियाँ बड़ी खुश हुईं, जो रावण के यहाँ कैद थीं। रावण ने भी उस दिन से स्त्रियों पर बलत्कार करना छोड़ दिया।

रावण कैलाश से निकलकर अपनी सेनाओं को स्वर्ग की ओर ले गया। चारों तरफ़ से स्वर्ग को रावण की सेनाओं

द्वारा घेरे जाने की खबर सुनकर इन्द्र ने देवताओं को युद्ध के लिए तैयार होने के लिए कहा, स्वयं विष्णु के पास गया— "रावण ने आक्रमण कर दिया है, अब क्या किया जाय? तुम्हारी सहायता से मैंने कितने ही राक्षस जीते हैं। क्या चक्र लेकर तुम रावण से लड़ोगे?"

"मैं उससे युद्ध नहीं करूँगा। वह हमारे हाथों नहीं मरेगा। अभी उसका समय नहीं आया है। अभी तुम ही उसका मुकाबला करो। तुम्हें कोई भय नहीं है।" विष्णु ने कहा।

देवताओं और राक्षसों का भयंकर युद्ध हुआ। रावण की सेनाओं का नेतृत्व रावण के बाबा, सुमाली ने किया और वह सावित्र नाम के वसु के हाथ से मारा गया। राक्षस सेना की भी काफ़ी क्षति हुई। नौ भाई उनमें मार दिये गये। इन्द्र ने खूब युद्ध किया और रावण को जीवित पकड़ लिया। यह जानकर मेघनाथ ने अपनी माया का प्रयोग किया, अदृश्य होकर युद्ध करते हुए वह आया। उसने इन्द्र को पकड़कर, अपने पिता को छुड़ा दिया, "युद्ध समाप्त हो गया है। हम जीते हैं। यह देखो, इन्द्र हमारे हाथों में है। तुम जैसे चाहो, तीनों लोकों पर शासन करो।"
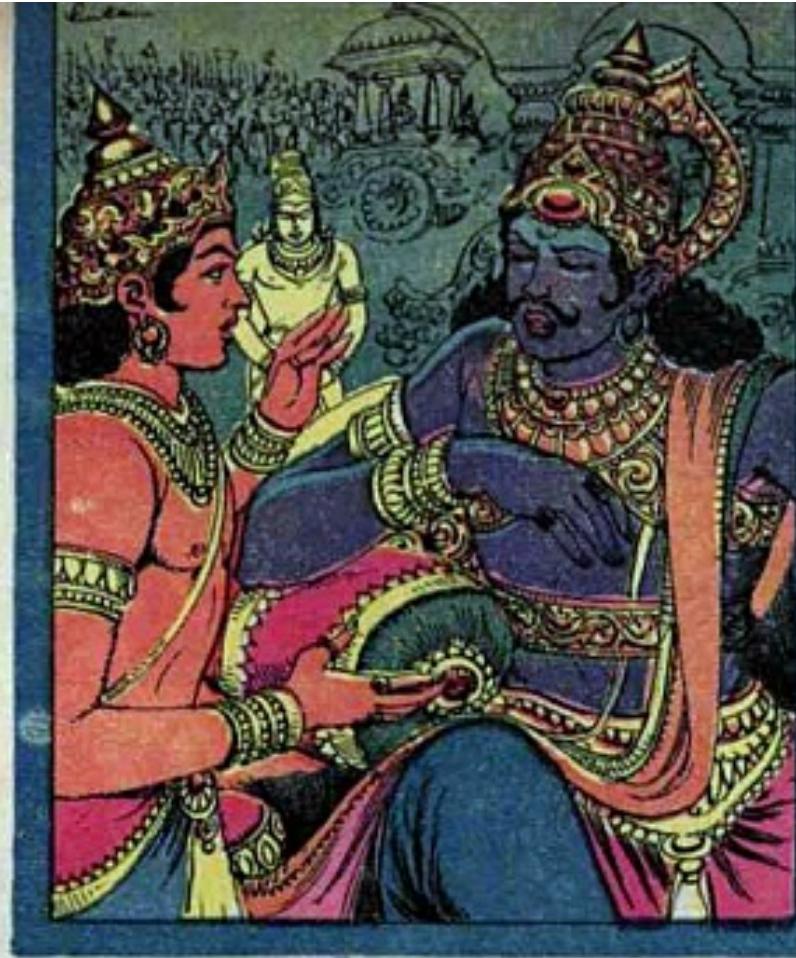
इन्द्र को पकड़कर, मेघनाथ इन्द्रजित कहलाया। अपने लड़के और उसके द्वारा पकड़े हुए इन्द्र को लेकर रावण वापिस लंका गया। इन्द्र को छुड़ाने के लिए देवता, ब्रह्मा को साथ लेकर लंका गये। ब्रह्मा ने रावण से कहा—"तुम्हारे लड़के का पराक्रम सचमुच बहुत बड़ा है। मैं उसे देखकर सन्तुष्ट हूँ। अब से तुम्हारा लड़का इन्द्रजित नाम से प्रख्यात होगा।

उसे कोई नहीं जीत सकता। उसकी सहायता से तुमने देवताओं को जीत लिया है, अब तुम इन्द्र को छोड़ दो।"

"बाबा, यदि चाहते हो कि मैं इन्द्र को छोड़ दूँ, तो मुझे पूर्ण अमरत्व दो।" इन्द्रजित ने कहा।

"बेटा, किसी भी प्राणी को पूर्ण अमरत्व नहीं मिल सकता।" ब्रह्मा ने कहा।

"यदि यही बात है, तो मैं भी पूर्ण अमरत्व नहीं चाहता। मैं भी तुमको तृप्त करने के लिए, रोज़ मन्त्र और हव्य के साथ अग्नि की अर्चना करूँगा। मैं जब युद्ध के लिए निकलूँ तो घोड़ों से सजा हुआ रथ अग्नि से मिलना चाहिए और जब तक मैं उस रथ पर रहूँ, मुझे अमरता मिलनी चाहिए। यह वर मैं माँगता हूँ। यदि मेरी अग्नि की अर्चना पूरी न हुई और उस हालत में मरना पड़ा तो मैं मर जाऊँगा।"

ब्रह्मा जब इसके लिए मान गया, तो उसने इन्द्र को छोड़ दिया। इन्द्र के साथ देवता स्वर्ग चले गये।

युद्ध के उन्माद में जब रावण ने भूलोक का पर्यटन किया, तो उसको अपजय भी मिली। उसके बारे में भी अगस्त्य महा मुनि ने राम को बताया।

हज़ार हाथवाले कार्तवीर्यार्जुन को जीतने के लिए रावण अपनी सेना के साथ माहिष्मती नगर गया। यह पता लगा कि अर्जुन उसी दिन अपनी पत्नी के साथ नर्मदा नदी में जल क्रीड़ा करने गया हुआ था।

रावण भी अपने परिवार के साथ नर्मदा नदी गया। वहाँ स्नान करके शिव पूजा करने के लिए बैठ गया। उसके मन्त्रियों ने नदी के तट पर पूजा के लिए पुष्पों के ढ़ेर लगा दिये। रावण हमेशा अपने पास

एक सोने का लिंग रखता था। उसको नीचे रखकर उसकी पूजा की। फिर उसके सामने गाता नाचने लगा।

नर्मदा नदी पूर्व से निकलकर पश्चिम की ओर बहकर समुद्र में गिरती है। ऐसी नदी तब पश्चिम से पूर्व की ओर बहने लगी। यही नहीं, नदी उफनती गई और रावण के पूजा फूल अपने साथ बहाकर ले जाने लगी। यह देख, रावण ने चुटकी बजाकर शुक सारण को बुलाया और उनसे यह मालूम करने के लिए कहा कि क्यों नर्मदा उल्टी बह रही थी।

उन्होंने जाकर देखा, तो कार्तवीर्यार्जुन अपनी पत्नियों के साथ जल क्रीड़ा कर रहा था। जब उसने अपने हज़ार हाथों से नदी का प्रवाह रोका, तो नदी उफनकर उल्टी बहने लगी। शुक सारण ने यह जाकर रावण को बताया। यह जानकर कि जिस "महा वृक्ष" का वे वर्णन कर रहे थे, वह कार्तवीर्यार्जुन ही होगा, रावण उससे युद्ध करने के लिए गया। और उसने उसके मन्त्रियों से कहा—"तुम अपने राजा से कहो कि रावण उसे युद्ध के लिए ललकार रहा है।"
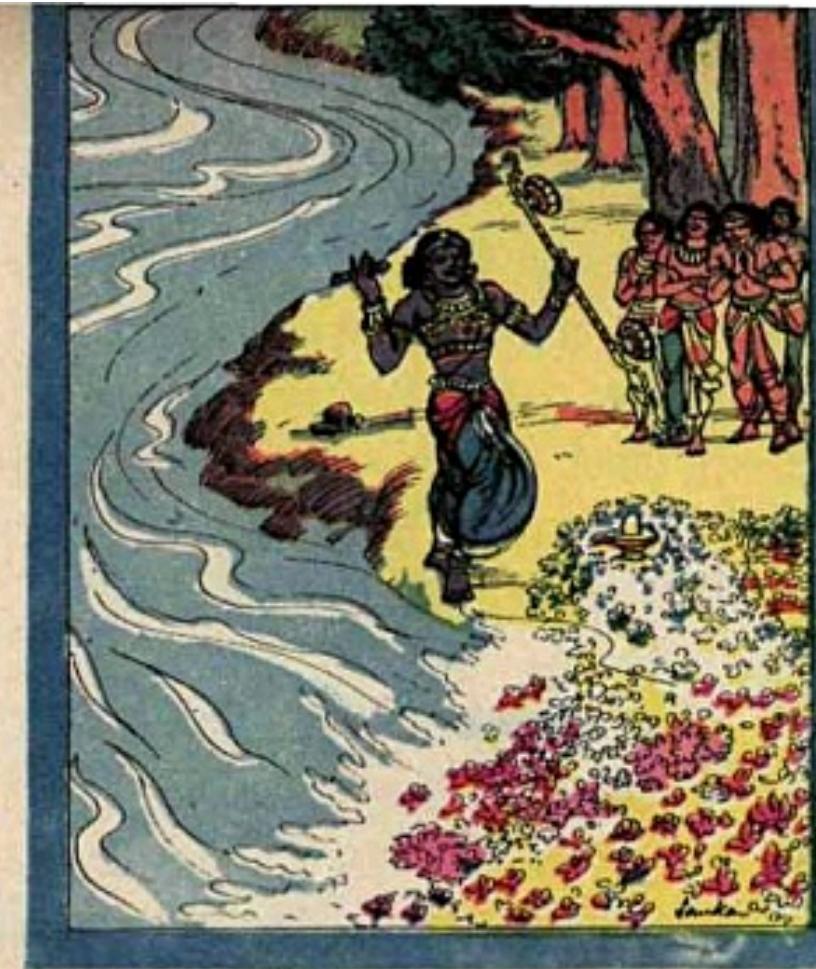
"युद्ध के लिए तुमने अच्छा समय चुना, जब राजा स्त्रियों से जलक्रीड़ा कर रहा हो, तब क्या युद्ध के लिए ललकारा जाता है! कल आकर अपने हाथों की खुजली मिटा लेना।" मन्त्रियों ने कहा। पर रावण ने तभी युद्ध करना चाहा। कार्तवीर्यार्जुन के मन्त्रियों ने कहा कि रावण पहिले उनसे युद्ध करे।

दोनों में युद्ध हुआ। राक्षसों ने अर्जुन के कई लोगों को मारा। कई को तो वे खा भी गये। युद्ध का कोलाहल सुनकर अपनी पत्नियों को निर्भय रहने के लिए

कह, गदा लेकर और उसको अपने पाँच सौ हाथों से हिलाता युद्ध स्थल पर आया। प्रहस्त मूसल लेकर उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। अर्जुन, प्रहस्त के फेंके हुए मूसल को अपनी गदा से तोड़कर, उसके पीछे पड़ा। जब गदा की चोट से प्रहस्त गिर गया, तो मारीच, शुक, सारण, धूम्राक्ष, महोदर आदि भाग गये।

इसके बाद रावण ने अर्जुन से युद्ध करना प्रारम्भ किया। दोनों ने एक दूसरे पर गदा से प्रहार किया, पर कोई भी न हिला। दोनों पहाड़ की तरह खड़े रहे। आखिर जब अर्जुन ने अपनी गदा रावण की छाती पर मारी तो वह टुकड़े टुकड़े हो गई और रावण उस चोट के कारण गिर गया। तुरत अर्जुन ने रावण को पकड़कर बाँध दिया और उसको अपने नगर ले गया।

यह बात स्वर्ग में पुलस्त्य ब्रह्म को मालूम हुई। वह अपने पोते के बारे में घबराया और भागा भागा माहिष्मती नगर पहुँचा। कार्तवीर्यार्जुन ने उसका खूब आदर सत्कार किया और पूछा कि वे किस काम पर आये थे।

"बेटा, तुमने मेरे पोते को ही जीत लिया है, जिसने तीनों लोकों को जीत रखा है। क्या पराक्रम है तुम्हारा! क्या शक्ति है! उसे छोड़ दो।" पुलस्त्य ने कहा।

कार्तवीर्यार्जुन ने कुछ न कहा। उसने रावण के बन्धन खोल दिये। अग्नि के समक्ष उसने उसके साथ स्नेह-सम्बन्ध स्थापित किये। उसे वस्त्र और आभरण उपहार में देकर भेज दिया।

# प्रद्युम्न की कथा

जटासुर का लड़का, शम्बरासुर था। आकाशवाणी हुई कि कृष्ण और रुक्मणी के लड़के, शम्बर के द्वारा उसकी मृत्यु बदी थी। यह सुन शम्बर कौव्वे के रूप में द्वारका गया। आठ दिन की उम्रवाले प्रद्युम्न को उठाकर वह ले गया। उसे समुद्र में डालकर, वह निश्चिन्त अपने रास्ते चला गया।

शिव के शाप से मन्मथ, जो राख हो गया था, रुक्मणी और कृष्ण के पुत्र के रूप में पैदा हुआ।

मन्मथ की पत्नी रति देवी, शम्बर की पुत्री के रूप में पैदा हुई। उसका नाम मायावती था।

शम्बर के फेंके हुए प्रद्युम्न को एक बड़ा मच्छ निगल गया और वह मच्छ एक मछियारे को मिला। चूँकि वह मच्छ बड़ा था, उसने उसे ले जाकर शम्बर की लड़की मायावती को दिया। जब उसे काटा गया, तो उसने अन्दर एक लड़के को देखा और उसको वह चुपचाप पालने लगी।

शम्बर को जब मालूम हुआ कि जिसके हाथ उसकी मृत्यु बदी थी, वह उसकी लड़की के पास ही बड़ा हो रहा था, उसने उसे मारना चाहा। पर जो युद्ध दोनों में हुआ—उसमें शम्बर ही प्रद्युम्न द्वारा मार दिया गया।

मायावती ने प्रद्युम्न को अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनाया। वह कुछ समय तक उसकी पत्नी रही। फिर उसने उसको द्वारका पहुँचा दिया।

अन्तिम पृष्ठ

रुक्मणी के भाई, रुक्मी की, रुक्मवती नाम की लड़की थी। उसका स्वयंवर निश्चित हुआ। उसमें बाकी राजाओं के साथ प्रद्युम्न भी गया। पर स्वयंवर से पहिले ही और राजकुमारों के देखते प्रद्युम्न उसको अपने रथ पर सवार करके ले गया। दोनों का विवाह हुआ। उनके अनिरुद्ध नाम का लड़का हुआ।

वज्रपुर का वज्रनाभ नाम का दानव राजा था। इसने तपस्या करके ब्रह्मा को खुश किया और उससे वर पाया कि देवता उसे पराजित न कर सकें और बिना उसकी अनुमति के कोई भी उसके वज्रपुर में प्रवेश न करे। इस वर के प्राप्त करने के बाद वह देवताओं को खूब सताने लगा। उसने इन्द्र को तंग किया कि वह उसे स्वर्ग का आधिपत्य दे। इन्द्र में भी इससे युद्ध करने की हिम्मत न थी। इसलिए उसने कश्यप की सलाह माँगी और कहा कि जैसा वह कहेगा, वह करेगा। इसके लिए वज्रनाभ भी मान गया। इसके बाद इन्द्र ने कृष्ण से लुके छुपे साँठ गाँठ करने की कोशिश की। कृष्ण ने उसको वचन दिया कि वह काम उसका लड़का प्रद्युम्न करेगा।

वज्रनाभ के प्रभावती नाम की लड़की थी। उस पर प्रद्युम्न को मोहित करके, इन्द्र ने उसको वज्रपुर पहुँचाने के लिए चाल चली। उसने इस काम के लिए शुचिमुखी नाम की मादा हँस को नियुक्त किया। वह प्रभावती के बाग में गई और उसके सामने प्रद्युम्न के सौन्दर्य की प्रशंसा की। प्रभावती में प्रेमोन्माद-सा पैदा कर दिया। प्रभावती ने उस हँस को मनाया कि जैसे भी हो प्रद्युम्न में उसके प्रति प्रेम जगाये और उसे उसके पास भेजे।

शुचिमुखी प्रद्युम्न के पास गई। उससे कहा—"तुम से एक महा कार्य होनेवाला है। तुम्हारे द्वारा वज्रनाभ को मरवाने के लिए तुम्हारे पिता कृष्ण और इन्द्र में कुछ समझौता है। वज्रनाभ के नगर वज्रपुर में तुम पहुँचे तो तुम्हें एक और लाभ भी होगा। वज्रनाभ की लड़की प्रभावती के समान तीनों लोकों में कोई सुन्दर नहीं है।"

प्रद्युम्न को हँस की बातें उतनी जँची नहीं। परन्तु उस हँस के चले जाने के बाद, प्रभावती के बारे में उसकी कही हुई बातें याद करके, वह उसको चाहने-सा लगा। तब उसने अपनी इच्छा के बारे में एक तोते के द्वारा, शुचिमुखी के पास चिट्ठी में लिख भेजा।

शुचिमुखी ने वज्रनाभ के पास जाकर कहा कि भद्र नाम का नट है। अगर किसी ने उसका नटन न देखा हो, तो उसका जन्म निष्फल है। उसकी उसने खूब प्रशंसा की।

वज्रनाभ को उस भद्र के नटन को देखने की इच्छा हुई। उसने हँस से उस नट को बुलाकर लाने के लिए कहा।

शुचिमुखी ने प्रद्युम्न का भद्र नाम रखा और उसको नट का वेष पहिनाकर वज्रपुर ले गई। यद्यपि वज्रनाभ को यह वर प्राप्त था कि बिना उसकी अनुमति के कोई उसके नगर में न आये वज्रनाभ ने मृत्यु के रूप में प्रद्युम्न को स्वयं बुलाया।

प्रद्युम्न ने वज्रनाभ के सामने गाते नाचते यह दिखाया कि वह प्रभावती से मिलनेवाला है। उसका ईशारा प्रभावती तो समझ गई, पर वज्रनाभ को न मालूम हुआ। उस दिन शाम को प्रभावती के पास जो फूल मालायें ले जायी जा रही थीं प्रद्युम्न उनमें एक भौरे के रूप में छुप गया। जब प्रभावती अकेली थी, तो वह असली रूप में प्रत्यक्ष हो गया। उन दोनों ने गन्धर्व विवाह कर लिया।

इसके बाद प्रद्युम्न लुका छुपा वहीं रहने लगा। कुछ दिनों बाद प्रभावती गर्भवती हुई और उसने एक लड़के को जन्म दिया। उसका नाम प्रभावन्त था।

इतने दिनों बाद वज्रनाभ को मालूम हुआ कि उसके नगर में पराये लोग आ गये थे और वहाँ रह रहे थे। उसने सेनापतियों को हुक्म दिया कि जो अन्तःपुर में लुका छुपा रह रहा था, उसको पकड़ लिया जाये। प्रद्युम्न और वज्रनाभ में युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रद्युम्न को इन्द्र की सहायता मिली और उसने वज्रनाभ को, जिसको यह वर प्राप्त था कि देवता भी न मार सकेंगे, मार दिया।

प्रद्युम्न ने प्रभावती के लड़के प्रभावन्त को वज्रपुर का राजा बनाया और प्रभावती के साथ द्वारका चला गया।

# ५०. प्राचीन सैप्रेस वृक्ष

मेक्सिको के ये प्राचीन वृक्ष कालिफोर्निया के रेडवुड वृक्षों की तरह असाधारण हैं। किसी समय टेक्स कोको सरोवर के पास इन पेड़ों का घना जंगल था। अब कहीं कहीं, इन पेड़ों के झुरमुट रह गये हैं। एक जगह २००, सैप्रेस के बीच, १७५ फीट ऊँचा, ५० फीट तने की परिधिवाला पेड़ है। उसकी उम्र ७०० वर्ष बतायी जाती है।

Photo by Vidyavrata
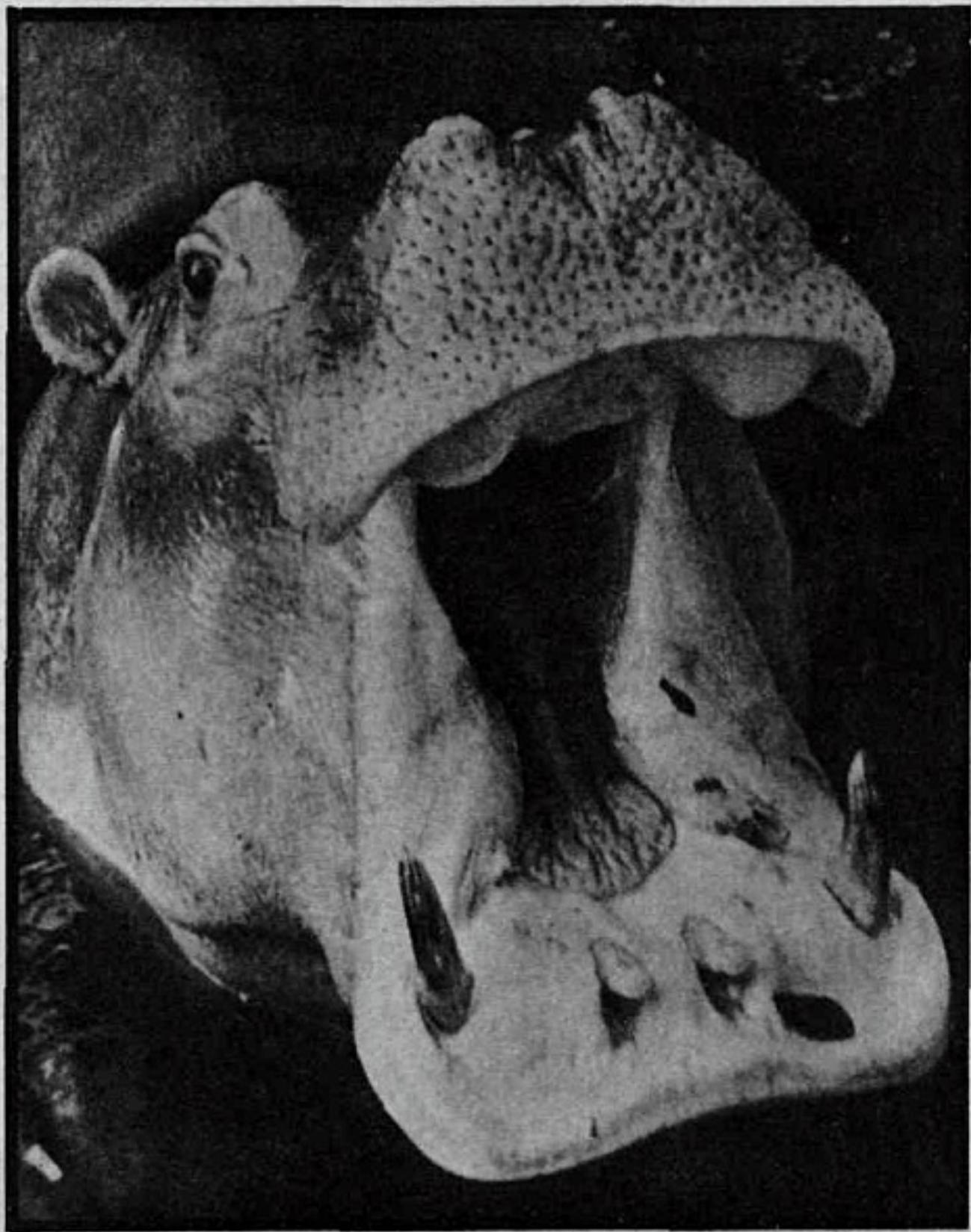
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

है मुख बड़ा !

प्रेषक :
जगदीश भार्गव - मुल्ताई

Photo by N. Ramakrishna

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

गन्ना है कड़ा !!

प्रेषक :
जगदीश भार्गव - मुल्ताई

# फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अप्रैल १९६६ :: पारितोषिक १०)

## कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ फरवरी १९६६ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

## फरवरी – प्रतियोगिता – फल

फरवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **है मुख बड़ा !**

दूसरा फ़ोटो : **गन्ना है कड़ा !!**

प्रेषक : **जगदीश भार्गव,**

C/o एफ. सी. भार्गव रईस, पो. मुल्ताई - जि. बेतुल (म.प्र.)

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Forhan's
FOR THE GUMS
COUPON
C.1
Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"
Name
Address

ब्रिटेनिया के
२ अपूर्व सुंदर उपहार के डिब्बे
ब्रिटेनिया
बिस्कुट

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1966 Regd. No. M. 5452

प्रद्युम्न की कथा